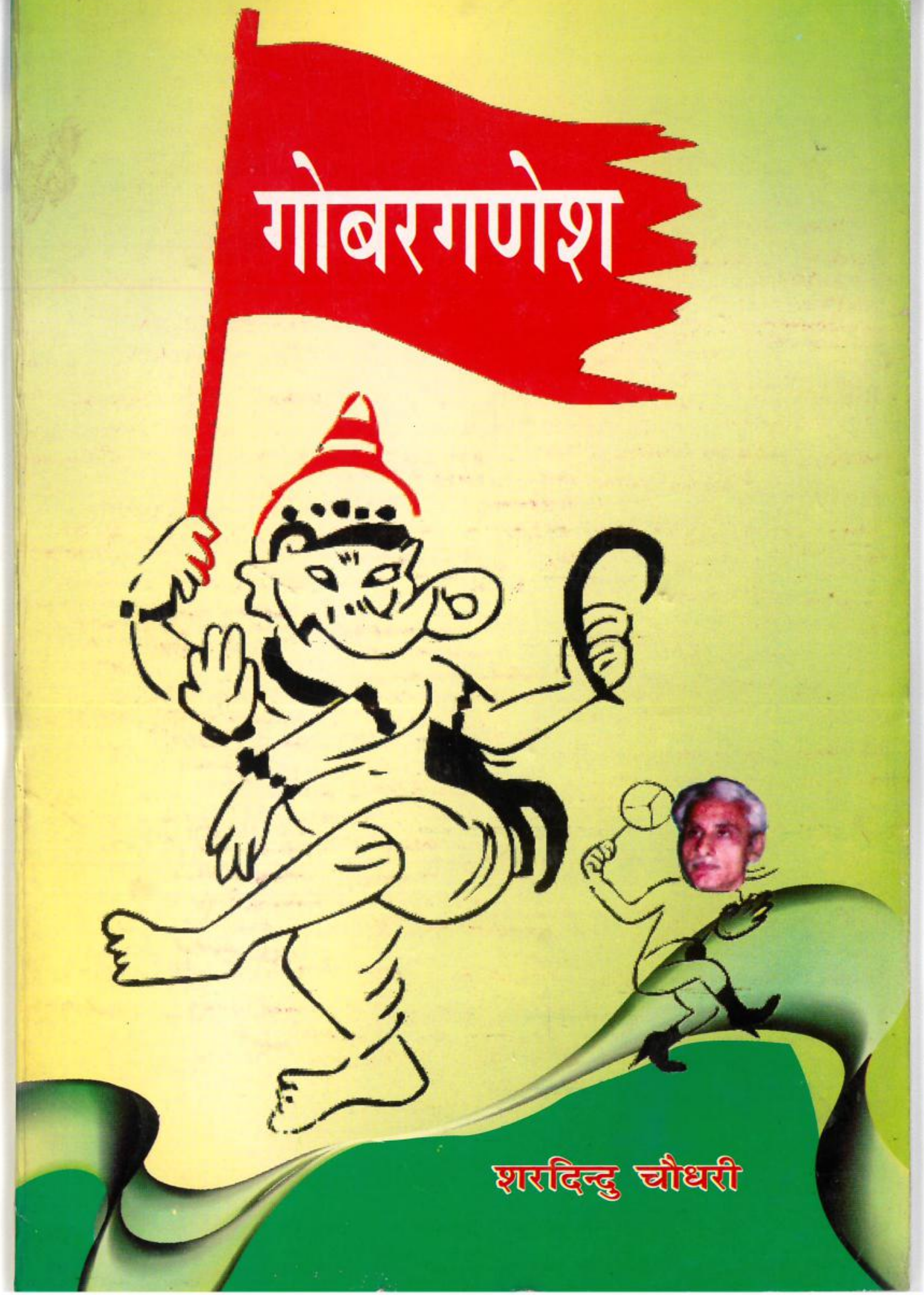
गोबरगणेश



शरदिन्दु चौधरी

गोबरगणेश

(व्यंग्य संग्रह)

शरदिन्दु चौधरी

शेखर प्रकाशन
पटना–24

Gobarganesh

by

Shardindu Chaudhary

प्रकाशक/मुद्रक :
शेखर प्रकाशन,
2A/39, टेक्स्ट बुक कालोनी
इन्द्रपुरी, पटना-24
मो० 09334102305

प्रथम संस्करण :
2011

प्रति :
पाँच सय

अक्षरांकन :
प्रीति शेखर

मूल्य :
50/-टाका

प्राप्ति स्थान :
शेखर प्रकाशन
पोपुलर फर्माक पाछाँ
न्यू मार्केट, पटना-1

समाजक असंख्य
दोहरी चरित्रक
महानुभाव
लोकनिकेँ
सप्रेम
भेंट

विषयक्रम

दू पांती अपन टेटरक मादे

अनकर टेटर देखबामे कोनो विद्वताक काज नहि पड़ैत छैक आ ने अनकर अंकुरी टेढ़ कहबामे संकोच। पोनपर तबला बजबऽमे आ कि अनकर खिधांस करबामे कोनो तारतम्य नहि होइत छैक। मुदा जखन अपन लिखल कोनो रचना सार्वजनिक होयबापर रहैत छैक तँ प्राय: सभ लेखकक स्थिति अथवा मानसिकता, जे कहू, ओहने सन भऽ जाइत छनि जेहन एकटा कुमारि कान्याक विवाह पूर्व निरीक्षणक समयमे रहैत छैक। सभ तैयारीक अछैत मोनमे धुकधुक्की लागल रहैत छैक जे सोझांवला लोक पसिन्न करत कि नहि।

मुदा आब ने रचनाकार केँ आ ने कान्या लोकनिकेँ ओ भय रहि गेलनि अछि। कारण बजार बड़ पैघ भऽ गेलैक अछि जाहिमे लोक फंसिते अछि आ फंसिते रहत। तेँ ने आब युवती लोकनि सकुचाइत-घबराइत सोझां अबैत छथि आ ने रचनाकार लोकनि। एकर एकटा कारण ईहो भऽ गेल अछि जे ई दुनू अपन-अपन कर्मशीलताक ट्रेलर बरमहल देखबैत रहैत छथि।

खास कऽ हमर लेखक लोकनि तँ एखन खूब बोकरि रहल छथि, छेड़ि रहल छथि। अहाँकेँ जँ बचि कऽ चलबाक अछि तँ रस्ता देखि कऽ चलू, हुनका दोष नहि दिअनु। कारण हुनको स्वतंत्रता प्राप्त छनि अहीं जकाँ–आखिर एहि स्वतंत्र देशक स्वतंत्र नागरिक ओहो छथि ने।

हमहूँ हुनका लोकनिक स्वतंत्रताक देखादेखी अपनाकेँ सर्वतंत्र स्वतंत्र मानैत लेखनक मैथिली संसारमे किछु-किछु ट्रेलर देखबैत एकटा छोट छिन व्यंग्य संग्रह प्रस्तुत कऽ रहल छी। अहाँ लोकनिकेँ नीक लागल तँ हमर सिक्का जमत आ जँ नहिये नीक लागल तँ हमर की

बिगड़त, यैह ने जे हमर आठ-दस हजार टका पानिमे चल जायत। जाय देबैक पानिमे, किएक तँ क्यो दारू-ताड़ी पीबि कऽ बुड़बैत अछि तँ क्यो-क्यो गाँजा-भांग पीबि कऽ। आर तँ आर क्यो-क्यो बाबू साहेब घर-परिवारक अछैत पर.....गमनक बाट धऽ सभ किछु बुड़ा लैत छथि। तखन तँ हमहीं बुधियार ने जे बोकरियो रहल छी, छेड़ियो रहल छी तँ 'अक्षर संसारेमे'।

अहाँ लोकनिमे सँ बेसी गोटे एखन 'कारी'क पक्षधर भऽ गेल छी चाहे ओ 'धन' होअय कि 'कर्म'क मामिला। लेकिन वर अथवा कनियाँ तकबा कालमे 'गोर-धप-धप' लेल अपस्यांत रहैत छी। मुदा कारीक पक्षधर होयबाक कारणे माथपर वैह बथाइत अछि जे लिखलाहा रहैत अछि। की कहू, हमरो अहीं सन चस्का लागि गेल अछि। हमर एक एकटा केस ऊज्जर भऽ गेल अछि। जँ ओहि पर कने-कने करिया रंग चढ़ा लितहुँ तँ अहीं जकाँ कारिख-चून लगयबाक सेहन्ता पूर भऽ जाइत मुदा हमरापर करिया कक्का तेना ने सवार भऽ गेल छथि जे किछु अनट-बनट करहे ने दैत छथि। लिखहो कालमे वैह किछु सँ किछु लिखा दैत छथि। तेँ एहिमे जँ किनको बेसी कहि देने होइ तँ ओ दोष हुनके देबनि, हमरा नहि।

हँ, एकटा बात अवश्ये कहब जे हमर लिखलाहा ई रचना सभ नहि पढ़ब तँ बादमे बेस पछतायब। आ से एहि कारणे जे एहिमे खाली टेटरे-टेटरे ऊगल छै। से जँ नहि देखब तँ हमर खिधांस कोना कऽ सकब। आ जँ हमर खिधांस नहि कऽ सकलहुँ तँ हम यैह बूझब जे अहाँ सुच्चा मैथिल, मैथिली प्रेमी नहि छी।

◆

– शरदिन्दु चौधरी

नरहेरक दाम

उपेन्दरजी बेस चिन्तित रहथि जे एहि बेर कोनहुना मनटुनमाक विवाह कराइये लेबाक अछि। आब बेस वयस भऽ गेल छैक। मुदा कन्यागत एकोटा अबितनि तखन ने कोनो बात बनितनि। भोर-सांझ एही चिन्तासँ मातल रहथि। आइयो एही चिन्तामे मगन भेल दलानपर आँखि मुनने बैसल छलाह।

करिया कक्का दिगम्बर बाबू ओहिठामसँ घुमि-फिरि कऽ अपन घर जाइत छलाह। उपेन्दरजीक दलानपर नजरि देलनि तँ देखलनि जे ओ चुपचाप चिन्तामग्न भेल बैसल छथि। ओ सड़केपर सँ हाक देलथिन–की हौ उपेन्दर, कोन फिकिर मे पड़ल छह भोरे-भोर जे अयनिहारो गेनिहारपर ध्यान नहि छह।'

'आउ, आउ करिया कक्का। कने बिलमि लिअऽ तँ जायब।' उपेन्दर आग्रह कयलथिन।

करिया कक्का दलानपर अबैत बजलाह–तोँ तँ एना चिन्तातूर भेल बैसल छह जे एहि बेर कन्यादान नहि हेतह तँ फांसी चढ़ि जयबह। हौ हमरा देखह, कतबो चिन्ता रहैए तँ ओकरा लग फटकऽ नहि दैत छिऐक। दू-दू-टा पौत्रीक विवाह करबाक अछि मुदा एकोरत्ती चिन्ता नहि। जे ऊपरवला करथिन सैह हेतैक।'

–से तँ अहाँ ठीके कहै छिऐक कक्का। कन्यादान तँ नहि मुदा वरदान तँ माथपर अछिहे। मनटुनमा सताइसक भऽ गेलै मुदा कतहुसँ कथा-वार्ता नहि अबै छै जे हम अपन एहि जिम्मेदारी सँ मुक्त होइ।' उपेन्दर अपन व्यथा व्यक्त कयलनि।'

करिया कक्का बोल भरोस दैत कहलनि–जँ एहने विचार छह जे एहि बेर वरदान कइये ली तँ लऽ जाहक सौराठ सभा। ओतऽ कतहु पटिये जेतह।'

'–की कहू कक्का, मनटुनमा कोन जोगरक छैक जे सभा लऽ जइऐक। जेना-तेना मैट्रिक कयने अछि। चाहै छी घर-कथे सँ काज भऽ जाय। ओतऽ तँ तते पूछा-पूछी हैत जे मनटुनमा की हम अपने उलाड़ भऽ जायब।'

–हौ, तोँ की उलाड़ हेबह। आब तँ सभे उलाड़ भऽ गेल छै। देखै छहक नहि जे आब बकड़ी बजार जेना हाट सँ उसरि गेलै तहिना सभोक हाल भऽ गेलै। आब तँ जेना खटीक सभ घरे-द्वारिसँ पाठा-पाठी टेबि कऽ उठा लै छै तहिना कन्यागतो सभ गुदगर-मांसुगर वर घरे पर टेबि लैत छै तँ सभा मे दमघिच्चे सभ ने जुटतैक। हँ, एकटा बात करह। पठा दहक, फेर देखल जयतैक।'

'–एहि सँ की हेतै कक्का, मनटुनमा तँ मनटुनमे ने रहतैक, ओकरामे सिंग-नांगरि नहि ने लागि जयतैक।'–उपेन्दरजी निसांस छोड़ैत बजलाह।

–यैह तँ तोरा सभ मे ऐब छह, सखो मनोरथ सभ टा पूर होयबाक चाही आ समाजमे जे खेल सभ चलि रहल छैक ताहूमे हिस्सा लेबऽ नहि चाहबह। हौ, सभा मे कहि दिहक जे वर केँ दिल्ली मे एकटा कम्पनीमे काज भेटि गेल छैक, विवाह लेल छुट्टी लऽ कऽ आयल छैक। एकाध गोटेकेँ हँ मे हँ मिलबऽ लेल ओतऽ राखि लिहऽ, आर की!' करिया कक्का हितोपदेश देलथिन मुदा उपेन्दरजी थतमताइत बजलाह–

'–कक्का, ई बात कोनो ने कोनो दिन खुजबे करतैक तखन तँ हमही ने अपटी खेत मे मारल जायब।'

'–तँ जेह फुराइत छह सैह करह। हमरा की, कहुना कुमरठेल्ले नहि रहि जाह तेँ किछु सोझ-साझ बाट देखा देलियह। विवाह भऽ गेलापर तँ सभ अपन माउगकेँ डेबिये लैत अछि मनटुनमो डेबिये लेतह।'

करिया कक्का साफ-साफ कहि जयबा लेल उठऽ लगलाह। उपेन्दरजी बजलाह–'कक्का उपाय तँ बतबिते छिऐक अहाँ सभक उद्धारक मुदा एहन किछु बताउ जे काजो भऽ जाय आ जगहँसाइ सेहो नहि हो।'

–हौ उपेन्दर तोंही कहह जे पढ़बा-लिखबा काल ओकरा नरहेर बनबा लेल छोड़ि देलहक आ आब ओकर विवाह कोना होइ ताहि लेल छटपटाइत छह। हौ, आब गामघर मे एक्कोटा घर भेटैत छह जाहिमे रहनिहारक धी-बेटी नहि पढ़ैत होइ। अखबार आ टी०भी०मे नहि देखैत छहक जे फल्लांक बेटी कलक्टर, एस. पी. बनि गेलैक तँ फल्लांक बेटी बी.ए. आ कि एम.ए. मे टॉप कयलकै। एते धरि जे सरकारी आफिस सँ लऽ कऽ प्राइवेट कम्पनी सभमे अपन योग्यताक बले धीरे-धीरे युवक सभसँ बेसी जगह छेकने जा रहल छै ओ सभ आ तोरे मनटुनमा सन-सन नरहेर बेरोजगारक संख्याकेँ दिन दुन्ना राति चौगुन्ना बढ़ौने जा रहल छै।'

'–मुदा कक्का आब जे भेलै से भेलै, माथपर जे समस्या छै तकरा ने सोझरेबाक छै।' उपेन्दर जिज्ञासु भावेँ कक्का दिस तकैत बजलाह।

'–तँ सुनह साफ-साफ बात। मोनमे जे घुरछी लागल छह तकरा निकालि फेकह आ जेना कन्यागत अपना माफिक वर तकैत अछि तहिना तोहूँ मनटुन योग्य लड़कीक खोजमे लागि जाह। आ हे, इहो ध्यानमे रखिहऽ जे संबंधमे व्यवसायक टंटा नहि ठाढ़ होअय। जहिना तोरा मनटुन प्रिय छह तहिना बेटीवलाकेँ सेहो अपन संतान प्रिय होइत छैक आ क्यो अपन संतानक सुख प्राति लेल कनेको पाछां नहि हटैत अछि।' –करिया कक्का उपदेशक जकाँ उपेन्दरजीकेँ बुझयबाक चेष्टा कयलथिन।

–'तँ की हम कनियाँक खोजमे बेटीवला ओतऽ जाइ। लोक की कहत हमरा? 'उपेन्दरजी कनेक रोषाइत बजलाह।

–'ओ आब बुझलियह। तोरा लोकक भय होइत छह। तँ जाह लोके लग। जतऽ जतऽ लोक जमा होइ ओतऽ डिगडिगिया पीट कऽ अपन समस्याक समाधान पूछह गऽ। जखन लोकेक चिन्ता छह अपन सन्तानक सुख सुविधाक नहि तँ जाह हाट (सभा)क चौपाटी पर, लोके तौलि कऽ बता देतह तोहर नरहेरक दाम आ तखने बुझयतह अपन कलाम।'

ई कहैत करिया कक्का उठलाह आ तीर जकाँ सड़कपर जा पहुँचलाह। कतबो उपेन्दरजी चाह पीबाक हेतु घुरि अयबाक आग्रह कयलथिन ओ घुरि कऽ तकबो नहि कयलथिन। ◆

परबा–युग

करिया कक्का दलानपर बैसल अखबार पढ़बामे मगन छलाह। चुनावी चनाजोरगरम नीक लागि रहल छलनि कि सामनेवला पड़ोसी रामपदारथ गेट खोलि दलानपर प्रवेश करैत टोकारा देलथिन–की करिया बाबू अहूँ हरदम किछु ने किछु मे मगन रहै छी, आबो तँ ध्यान दिऔक।'

करिया कक्का चौंकलाह–'की देखि लेलहुँ यौ अहाँ हमरामे जे अहाँकेँ हम अलबटाह बुझा रहल छी?'

'अहाँ तँ तेना ने धऽ लैत छिऐ तुरंतेमे जे मुँहक बात मुँहेमे रहि जाइत अछि।' कने गपकेँ चिबबैत रामपदारथ आगू बढ़लाह–अहाँकेँ कैक बेर कहलहुँ जे घर पर ध्यान दिऔक तँ अहाँ काने बात नै दैत छी। यौ देखियौ, अहाँक चारू भर तीनमहला-चरिमहला बनि गेलै आ अहाँ छी जे जे दू-तीन टा कोठली ताहि जमानामे ठाढ़ कयलहुँ ताहीमे धूनी रमौने छी। अरे, युग बदललै, जमाना बदललै, अहूँ बदलू।'

करिया कक्का चुपचाप रामपदारथकेँ घुरैत रहलाह आ रामपदारथ अपन बात पसारैत गेलाह–'की बात छै जे अहाँ अपन आमदनी सभा-सोसाइटी, पत्र-पत्रिका आ कि पोथीपर खर्च कऽ दैत छिऐ, लोककेँ खुआबऽ पियाबऽमे हजारो बरबाद कऽ दैत छी मुदा एकटा निस्सन देखनुक घर बनायब ताहि दिस ध्याने नहि दैत छिऐक।'

–तँ अहाँकेँ की बुझाइत अछि जे हम आ कि हमर बाल-बच्चा घर मे नहि खोहारीमें रहैत अछि।'

'हमर मतलब से नहि अछि करिया बाबू। हमर कहबाक तात्पर्य ई जे भगवान अहाँकेँ एहि राजधानी मे दू कट्ठा जमीन देने छथि। आगू-पाछूक जमीन जहिना-तहिना बेकार पड़ल अछि। तेँ कहलहुँ जे समटि कऽ घर बना लियऽ आ लगा दिअउ भाड़ापर। घर बैसल आमदनी होयत। 'रामपदारथ परामर्श देलथिन।

करिया कक्का तरंगैत बजलाह–आ ई जे केरा, लताम, दाड़िम, नेबोक गाछ आकि अड़हूल, अपराजित, तग्गर, बेली-जूही, सजमनि-करैलाक लत्ती अछि तकरा सभकेँ काटि-छाँटि फेकि दियौक? सैह ने अहाँ कहै छी?'

रामपदारथ अपन परामर्श केँ कारगार होइत देखैत बजलाह–ई सभ दैते कतेक अछि अहाँके? देखियनु उपाध्यायजीकेँ, एतबे जमीन मे कोना रूमपर रूम बना हजार टकेक भावसँ भाड़ा लगौने छथि।'

'ओ आब बुझलहुँ हम अहाँक बात। अहाँकेँ हमर फूल तोड़ब, नेबो-लताम तोड़ब आ गाछ-पातक सेवा करब देखैत नहि सोहाइत अछि। अहाँ चाहैत छी जे हमहूँ उपाध्यायजी जकाँ एकटा नीक दरबान बनि रातिक बारह बजे जखन सभ किरायेदार आबि जाय तँ ओकरा बन्द करू आ पाँच बजे भोरे उठि कऽ खोलू। एकटा नीक मेहतर जकाँ जकर-जकर फ्लैटक नाली जाम भऽ जाइ तकरा बांसक फट्टा लऽ कऽ खोंचारि खोंचारि साफ करी। भोरसँ सांझ धरि जते लोक ओहि 'धर्मशाला' मे आबय तकर लेखा राखी, ककरो कल टूटइ, ककरो बिजलीक होल्डर कि स्वीच भंगठइ तकरा ठीक कराबी आ मास लगलापर किराया लेल सभ लग छिछिआइत फिरी, सैह ने।''

बजैत-बजैत करिया कक्काक दम फुलय लगलनि। रामपदारथ जा आगाँ बाजथि करिया कक्का फेर चालू भऽ गेलाह–

'यौ, अहाँ जाहि घरक बात करैत छी से हम 25 वर्ष पूर्वे बनौने रही। घर मतलब होइ छैक मोनक मिलान आ से नहि तँ घर की? अहाँ जे हमरा घरक बात कहैत छी से अपना हृदयपर हाथ राखि बाजू तँ अहाँ प्रसन्न छी अपन घरसँ। अहूँकेँ तऽ चारिमहला घर अछि? एकटा पूजाक फूल लेल, की एकटा दतमनि लेल फिफिया जाइ छी।'

–'अहाँ तँ खिसिया गेलहुँ करिया बाबू। घरसँ हैसियत बढ़ैत छै, जकरा जतेक टा घर-बित रहैत छै तकर समाजमे ततेक मान-दान होइत छै से नहि देखैत छिऐ'–रामपदारथ करिया कक्का केँ शान्त करबाक उद्देश्यसँ अपन बात रखबाक कोशिश कयलनि कि करिया कक्का आर

भभकि गेलाह–'यौ मान-सम्मान की होइत छैक से हमरा सिखय पड़त। अहीं कहू कैक गोटा अछि जे कोठा-सोफासँ मान पौलक अछि। कोठा सोफा जँ मान दिअयबाक पौदान होइतैक तँ सभ मोक्ष पाबि जाइत। यैह-यैह देखू अजुके अखबार! काल्हि जे मोटर-चोरक गिरोह पकड़ल गेल अछि ताहिमे एहने-एहने कोठा-सोफावलाक वारिश अछि। अपहरण कांडक जे सरगना पकड़ायल अछि ओहो एहने नामी लोकक बेटा अछि, आ हे, ई जे बलत्कारक आरोपक समाचार अछि ताहूमे सेहो एहने मानवला लोक छथि।'

'तँ की सभ मकानवला एहने होइ छै सैह ने अहाँ कहऽ चाहइ छी।–रामपदारथ खौंझाइत प्रश्न कयलथिन।

'नहि यौ, सेहो हम नहि मानैत छथि। अहाँ खाली मकान-कोठा सभपर ध्यान दैत छिऐ। युग बदलि गेलै से देखबे नहि करै छिऐ। यौ! घर-घरनीसँ होइ छै आ आब घरनी घरमे नहि रहय चाहै छै। नारी सशक्तिकरण युग चललैए। ओ घरक काज नहि बाहरक काज करय चाहै छै। ओ केस कटा आफिस जाइ छै तँ घरकेँ के लगौतै, के सजौतै? अहाँ कहब नोकर-चाकर-दाइ-नौरीन सैह ने।'

'हँ-हँ, जँ पाइ रहतै तँ एकटा मकान की दस-बीस टाक देखभाल कयल जा सकै छै–रामपदारथ हड़बड़ाइत बजलाह।

करिया कक्का बिहुँसैत बजलाह–हमहूँ अहाँकेँ सैह कहैत रही-सैह कहबो करब। एखन अहाँकेँ सक अछि तेँ ई कहि रहल छी। बेटा-बेटीकेँ पढ़ा रहल छी तेँ ई सभ सोचि रहल छी। अच्छा छोड़ू ई बात । ई कहू जे अहाँक पिता कहाँ रहैत छलाह।

रामपदारथ हँसैत बजलाह–अहाँकेँ नहि बूझल अछि जे ओ गाममे रहैत छलाह।'

'ईहो छोड़ू । ई बताउ जे अहाँ पटनामे किए बसलहुँ–करिया कक्का गंभीर होइत पुछलथिन।

'पटनामे गामसँ बेसी सुविधा उपलब्ध छै तेँ–रामपदारथ तपाकसँ उत्तर देलथिन।

'आब अहाँ ई कहू जे अहाँक बेटा बंगलोर मे पढ़ैत अछि आ बेटी दिल्लीमे। ओ सभ जखन नोकरी करत तँ अहाँ लग आयत से विश्वास अछि अहाँकेँ?'

करिया कक्का प्रश्न पर प्रश्न कयने जा रहल छलाह आ रामपदारथ मकड़ा जकाँ अपन जालमे स्वयं फंसल जा रहल छलाह। बाजि उठलाह–'से एखन कोना कहू?'

करिया कक्का आब सेरपर पसेरी जकाँ बनैत बजलाह–ओ सभ किन्हु अहाँ लग नहि रहत से हम एखनहि कहि सकैत छी। यौ, आबक लोक 'परबा-युग' मे चलि गेल अछि। जावत पंख नहि होइत छैक माय-बापक 'खोप' मे रहैत अछि आ जखने पाँखि होइत छैक तखने उड़ि जाइत अछि आ अपन खोप बना अन्तः बसि जाइत अछि। उनटि कऽ देखितो नहि अछि जे ओ कोन खोप मे जनमल छल आ के ओकरा पोसने रहैक।'

'तकर मतलब ई नै ने जे हम सभ हाथ पर हाथ दऽ बैसि जाइ।'–रामपदारथ बजलाह।

–'से हम कहाँ कहै छी। हम तँ एतबे कहब जे उपाध्यायजीकेँ देखियनु, विद्याजीकेँ देखियनु आ अपनोकेँ देखू जे परबा-युगकेँ प्रोत्साहित कऽ की पौलहुँ। जे-से कऽ कऽ आलीशान मकान तँ बना लेलहुँ मुदा भोगत के से चिन्तामे रखने सँ पड़ल छी।'

करिया कक्का हितोपदेशक जकाँ बजैत रहलाह–देखै नहि छिऐ परबा-युगकेँ प्रोत्साहन देबऽ लेल कोना एपार्टमेन्ट संस्कृति चललैए जाहिमे रहैत तँ सय-सैकड़ा लोक अछि मुदा ककरो-ककरोसँ भेंट नहि, मेल नहि, सरोकार नहि। इंच-इंच एक्के खोप मे जगह कीनू आ कोसो कोस दूर धरि मोनक मिलान नहि। आ अहाँ सभ ओकरे मान-मर्यादा बुझै छिऐ आ ओकरे नकलमे घर पर घर पिटने जा रहल छी। ई एको बेर नहि देखै छिऐ जे अहाँक घर कतेक दरकि गेल अछि।

'यौ रामपदारथजी, हम तँ सोचि लेने छी जे हम जावत जीयब एतबे टा घरमे रहब आ अपना लेल फल-फूल-पातकेँ जोगाकऽ राखब

जतऽसँ अपन परबा जँ उड़ियो जायत तँ कखनो बगड़ाक कलरव, कखनो पौरुकीक गुटरगूँ तँ कखनो कोइलीक तान सुनि सकब। नेबोक रससँ कंठ तऽर करब तँ लताम-केराक फलहार करब। अलहुड़क लाली आ कनैल पीयरी सँ घरकेँ घर जकाँ सजायब ने कि कोनो दरबान जकाँ हाथमे ठेंगा नेने आ कि कोनो मेहतर जकाँ मकानक नाली-नाला केँ खोंचारबा लेल एमहर सँ ओमहर मड़राइत रहब। मोन हहरैत रहत, दरकैत रहत आ मिथ्याभिमान लेने कूही होइत रहब।'

'-करिया बाबू यौ, यौ करिया बाबू किछु हमरो सूनब आ कि एकदिसाहे कहने चलं जयबै-रामपदारथ करिया कक्काक देह छुबैत कहलथिन।

एकाएक करिया कक्काक भाषणपर ब्रेक लागि गेलनि। ओ टुकुर-टुकुर रामपदारथ दिस ताकय लगलाह आ धीरेसँ एतवे बाजि सकलाह-

'हमरो बाबू गाममे बड़का टा मकान पिटबौने छलाह मुदा हम सभ.....।' एतवा कहैत-कहैत हुनका बकौर लागि गेलनि आ आँखिसँ दू ठोप नोर ढबकि गेलनि । रामपदारथ, जे करिया कक्काकेँ धन-सम्पत्ति अर्जनक भूख जगबऽ आयल रहथि तनिका पतिया लागि जयबाक डर जकाँ भऽ गेलनि आ ओ कलेबले उठिकऽ अपना घर दिस विदा भऽ गेलाह।

◆

खट्टा माहात्म्य

मिथिलामे 'खटगर' स्वादक बड़ महत्त्व मानल गेल अछि तेँ विभिन्न प्रकारक अचारक अछैत माछमे नेबोक महत्ता, दालिमे आमिलक योग आ भरिपोख भोजनक बाद दहीक सेवन अमृत तुल्य मानल गेल अछि। मुदा जँ आजुक समाचारक बात करी तँ प्रत्येक दिन एहन-एहन समाचार भेटत जे आँखि तँ कोत करिते अछि दिमागकेँ से खट्टा कऽ देत जे अहाँ कतबो खट्टा प्रिय होइ ओ भारिये पड़त।

हरिमोहन बाबूक जमानामे ठुर्री लताम आ कि कटहरक मोछक झक्का खयबा लेल छौंड़ा-छौंड़ी रौदक परवाहि कयने बिना ओकरा बनयबाक व्योंत मे लागल रहैत छल। युवती लोकनि सेहो टिकुला होइते ओकर स्वाद पयबा लेल बेहाल भऽ उठैत छलीह। मुदा एहि सभक स्वाद पयबामे एकटा बात ताहिया रहैत छलै जे नव फऽरक नव-नव स्वाद एकटा नव स्फूर्ति आ नव प्रकारक आनन्द दैत छलैक। मुदा आब देखैत छी जे वैह लताम, वैह कटहरक मोछ आ कि वैह टिकुला होइत अछि तैयो ने ओ स्वाद आ ने ओ स्फूर्ति जखन कि कलमे-कलमे मोबाइलक घंटी टुनटुनाइत अछि आ घरे-घरे 105 टा चैनेलक देओर-भाउज आ जंगला-मंगला अनघोल कयने रहैत अछि।

कहलनि करिया कक्का-कोइलीक तानकेँ खा गेलैक ई मोबाइली युग तँ कतयसँ भेटतह तोरा झक्का आ टिकुलामे ओ स्वाद। तों सभ भऽ गेलह सुविधाक गुलाम तँ स्वादक महत्त्व की बुझबह। आब तों सभ हौलीबुडक नायिका पोल्ट्रा कहिया तेसर बेर गाभिन होयबाक व्योंत धराओत तकर चहटगर स्वाद लेल अखबार चटबह की उसनलहा खेरहीक दालिमे जमीरीक रस गाड़ि ओकर अपूर्व स्वादक सेवन करबह। आंइठ-कूठ खयनिहार सभकेँ 'सानिया-शोएब'क समाचारक अचारमे स्वाद भेटतैक कि अरिकचक झोरमे इमलीक स्वाद बुझयतैक।'

ठीके कहैत छथि करिया कक्का जे हमरालोकनिक जीह आब मात्र खटहर स्वाद टाकेँ चिन्हैत छैक ओकर अपूर्व मौलिकता आ ग्राह्यताकेँ नहि। काल्हियेक तँ बात अछि गेल रही एकटा पत्रिकाक दोकानपर। ओतऽ जतेक पत्र-पत्रिका छल ताहिमे सँ अधिकांशक मुखपृष्ठपर युवतीये सभ विभिन्न भाव-भंगिमामे उपस्थित छल। चित्र सभसँ बुझना जाइत छल जे ओ सभ किछु नव करबा लेल अति उताहुल छल। केओ कपड़ा उतारि रहल छल तँ केओ एकाध बीत कपड़ा देहपर राखि गांधी जीकेँ चैलेन्ज कऽ रहल छल। हँ, एकटा युवती, जे प्रकृति प्रेमी बुझायल से अद्भुत काज कऽ रहल छलि। एकटा खूब नमगर सजमनिकेँ भरि पांजि पकड़ि ओकरा चाटि रहल छल। फोटो कैप्सन पढ़लापर बुझलहुँ जे ओ शाकाहारी भोजनक प्रचार हेतु 'ब्रांड एम्बेसडर' नियुक्त भेल छल एकटा कम्पनी द्वारा आ ओहि चित्र द्वारा ओ अपन अभियान प्रारंभ कयने छल। जखन पत्रिका खोलि ओहि चित्रक मादे समाचार पढ़लहुँ तँ ज्ञात भेल जे ओहि चित्रकेँ वर्षक सर्वश्रेष्ठ छायाचित्र पुरस्कार सेहो भेटल छलैक। मोन गद-गद भऽ उठल जे आखिर ई चित्र आधा आबादी केँ एकटा नव संदेश अवश्य देने होयत।

ओना करिया कक्का हरदम कोनो गप्प झोंकाहे स्वरमे बजैत छथि मुदा जखन हम चित्रक मादे कहलियनि तँ गंभीर भऽ उठलाह। कहलनि–हौ, तों वयसम छोट छह तेँ की कहियह मुदा एते जानि लैह जे ओ बीत भरि कपड़ावाली युवती जे गप्प उघार भऽ कऽ नहि कहि सकलह ताहिसँ बेसी खानगीवला गप्प कहैत छैक ई चित्र। आखिर 'ब्राण्ड अम्बेसडर' यैह तँ काज करैत छैक- जे क्यो ने बुझा सकय से ओ एक्के झलकमे देखा दैत छैक।'

हम सभ नेना रही तँ एहि मासमे मैया आम, कटहर, करैला, परोड़क अचार बनबथि। आमोक अचारमे सचार रहैत छल। ई की तँ कुच्चा, ई की तँ कटुआ। तहिना फारावला अलग तँ बिनु छिलका वला लटपट अलग। मसल्लो अलग-अलग, कोनोमे उलायल तँ कोनोमे पिसुआ, कोनोमे अखड़ा तँ कोनोमे लौंग-इलायची देल गमकौआ। खट्टो स्वादमे बारह मसल्ला तेरह स्वाद। मुदा आब की मजाल जे ओ स्वाद

आ सुगंध अपन घरसँ बहरायत। आब डाबरक 'चिल्ली' खाउ आ कि एम.डी.एचक मिक्स्ड अंचार खाउ, जेना पटना, मुजफ्फरपुर आ कि भागलपुर सँ निकलल अखबारक मिक्स्ड समाचार। ओहिना जेना 'लोकल' तरकारी बिकाइए तहिना समाचारो बिकाइए आ अचारो। समाचारो तेहने स्वादक जेना आलूक अचार गर्मी मे चारि दिनक बाद स्वाद दैत अछि। खट्टाक संग-संग लसलस सेहो।

पूछि देलियनि-करिया कक्काकेँ पहिने जकाँ मिथिलामे अचार किए नै बनै छै आब कक्का?'

गप्प केँ लोकैत बजलाह–हौ आब बेसी घर मे टी.बीक लाथें आ कि अखबारक माध्यमे समाचार अबैते रहैत छैक जाहिमे मीठक मात्रा कम आ अम्मत स्वादे बेसी रहैत छैक ताहिठाम अचारक आवश्यकते की? आ सत्य पूछह तँ जाहि घरमे मियां-बीबी-बच्चे टाक जगह होइत छैक दादा-दादी, काका-काकी आ पीसीक नहि ताहिठाम अंचारक कोन प्रयोजन आ प्रवेश? नेनाकेँ टॉफी-चौकलेट दऽ दियौ आ अपने दुनू प्राणी जिनगीक खट्टा-खट्टौअलिक स्वाद लैत रहू अँचारक कोन काज?'

कक्कासँ आगाँ पूछबाक साहस नहि भेल कारण हुनकर एक-एकटा बात बिनु नोन देल अमड़ाक चटनी सन खट्टा लागि रहल छल।

◆

करिया कक्काक 'एलान'

करिया कक्का पूरा 'मूड' मे छलाह। जे क्यो सोझां अबनि तकरा तेहन-तेहन बात कहथिन जे छक दऽ लागि जाइक। मुदा हुनका क्यो एहि कारणे जबाब नहि देनि जे ओ कटु सत्य बाजथि। आ से तेहन कटु जे हुनकर सोझां ठाढ़ व्यक्ति निरुत्तर भऽ जाय।

ओ मूडेमे छलाह कि कलाधर बाबू, जे मुम्बइमे एकटा बैंकक मैनेजर छथि, दलानपर प्रकट भेलथिन। कलाधर बाबूकेँ देखिते हुनका सिरिंग चढ़ि गेलनि। बाजि उठलाह-की यौ कलाधर, अहाँ गामक सीमान टपि हमरा दलान धरि कोना पहुँचलहुँ!'

कलाधरजी सकुचाइत बजलाह-कक्का अवसरे ने भेटैत छैक नोकरी सँ जे गाम दिस....।' हुनकर बात बीच्चहिमे कटैत कक्का बजलाह-कन्यादान अछि माथपर आ कि डीह-डाबर बेचऽ अयलहुँ अछि!'

कलाधर अपरतीव सन मुँह बनबैत बजलाह-अहाँ तँ अगमजानी छी कक्का, कोना बूझि गेलिऐक जे हम कन्यादानक व्योंतमे आयल छी।'

'-हे यौ कलाधर, हम अगमजानी नहि आगम जानी जरूर भऽ गेल छी जे सुविधा भोगी लोक गाम किएक अबैत अछि से जानि जाइत छी, बुझलहुँ कि ने। गाम आब दुइये कारण सँ लोक अबैत अछि से पहिने कहि देलहुँ। रहल बात तेसर तँ ओ ई अछि जे मिथिलामे रहनिहार लोक आब मैथिल नहि रहल। जे जतहि रहैत अछि ओही ठामक भऽ गेल अछि। मायकेँ बिसरि गेल, मातृभूमि केँ बिसरि गेल आ सभ सँ पैघ कृतघ्नता ई जे अपन मातृभाषाकेँ सेहो धो-पोछि कऽ चाटि गेल अछि।'

-नहि, नहि, से नहि कहियौक कक्का, ने हम मिथिला केँ बिसरलहुँ अछि, ने अपन मैथिली भाषाकेँ।'

-से हम कोना मानब यौ! अहाँ गाम परसूये अयलहुँ से हमर 'युवा बिग्रेड' खबरि कऽ देने छल। आ वैह सभ कहलक जे अहाँ सपरिवार आयल छी मुदा अहाँ सभ आपसमे हिन्दी-अंग्रेजीमे गिटिर-पिटिर करैत गाममे प्रवेश कयलहुँ।'

कलाधर बाबू ई सभ सुनैते मातर गुम भऽ मूड़ी झुका लेलनि।

कक्का हुनक झुकल मूड़ीकेँ देखि आर मूडमे आबि गेलाह-अयं यौ, अहाँ कहै छी जे हम किछु नहि बिसरलहुँ। गाममे पयर देलहुँ तैयो मैथिली मुँहसँ नहि निकललीह आ कहै छी किछु नहि बिसरलहुँ। रच्छ रहल जे हमर सेना गाममे घुसय देलक बौआसिन आ धीया-पूता छल तेँ ने तँ अहाँ गाममे प्रवेश नहि कऽ सकितहुँ।

-'कक्का हमरासँ गलती भऽ गेल माफ कऽ देल जाय। मुदा एकटा बात नहि बुझलहुँ-ई युवा ब्रिगेड, सेना, तकर अर्थ नहि बुझलहुँ, ई सभ की थिक।'

-कलाधर बाबू अहाँ पढ़ल-लिखल लोक, साहेबी करै छी! कोना एहि दुनूक अर्थ नहि बुझैत छी से आश्चर्य लगैए। ई ने पूछू जे ई बिग्रेड आ सेना की करैए!-कक्का एक ठोहा आर देलथिन।

'हँ-हँ हमर पुछबाक सैह आशय छल-कलाधर अकबकाइत पुछलनि।

'जानऽ चाहैत छी तँ खुलि कऽ सुनि लियऽ। ई युवा बिग्रेड आ सेनाक काज छै ओहन मैथिलक पहचान करब जे अछि तँ मिथिलाक मुदा मिथिलाक मान-सम्मान अथवा अस्मिता लेल किछु नहि करैए आ मात्र विवाह आ श्राद्ध कालमे मैथिल बनि प्रकट होइए अपन उद्धार लेल। ओकरा ने मिथिलाक चिन्ता रहैछ आ ने मैथिलीक। तेँ एहन अवसरवादीक वहिष्कार आ असहयोग करैछ ई सेना। हम एलान कऽ देने छी जे जे मैथिली नहि बाजत, जे जनगणनामे अपन मातृभाषा मैथिली नहि लिखाओत

तकर वहिष्कार कयल जाय आ कोनो सामाजिक कार्यमे ओकर सहयोग नहि कयल जाय। हमर युवा बिग्रेड ई काज गामे गाम बेस साकांक्ष भऽ कऽ कऽ रहल अछि।'

कक्काकेँ बीच्चहिमे रोकैत कलाधर बाबू बजलाह-'ई तँ नीक बात नहि भेल। क्यो आसरा लऽ कऽ गाम अबैए जे अपन लोकक बीच जा कऽ काज सम्पन्न करब मुदा ओकर वहिष्कार करै छी अहाँ सभ। ई कोनो....।'

-'अयँ यौ महानुभाव लाज नहि लगैए एहन बात बजैत! जे मैथिल समाज पोसि-पासि कऽ पैघ कैलक, बाजब-झूकब सिखौलक, पढ़ौलक-लिखौलक तकर नोन खा कऽ अहाँ सभ किछु बिसरि गेलिऐक। जे कमौलहुँ से ओतहि गमौलहुँ। ओकरे बोली-बानीमे रमि गेलहुँ। आ पतिया नहि लागि जाय ताहि लेल घरमुँहा भेल छी। एहन-एहन कपूतक कोनो खगता नहि अछि हमरा सभकेँ। एहन कपूतकेँ मिथिला नहि स्वीकारत जे ओकर वाणियोक इज्जत नहि कऽ सकैए। चलि जाउ कलाधर बाबू एहि ठाम सँ! जाहि पुत्रकेँ अपने टा आकांक्षाक पूर्तिक सख होइक से मिथिलाक नहि भऽ सकैए। तुरत चलि जाउ एहिठामसँ नहि तँ हमर युवा बिग्रेडक एक्को सदस्य पहुँचि गेल तँ हमरा सोझे मे अहाँक गंजन भऽ जायत।'-करिया कक्का रोषमे बजैत कलाधर बाबू दिससँ मुँह फेरि लेने रहथि।

कलाधर बाबू नेहोरा करैत बजलाह-कतऽ जाउ हम आब। सभठामसँ हारि कऽ गाम अयलहुँ आ अहाँ कहैत छी चलि जाउ एहिठामसँ।'

-हँ यौ, अहाँ एहिठामसँ तुरत विदा भऽ जाउ। जाउ जतऽ मुम्बइ मे छी ओतहि आ एहि बेरक जनगणनामे अपनो परिवारक मातृभाषा मैथिली लिखाउ आ ओहिठाम बसल आनो मैथिलकेँ प्रेरित करू, तेयार करू। येह हमर आदेश अछि, परामर्श अछि, आग्रह अछि।' करिया कक्का सपाट स्वरमे बाजि उठलाह।

'आ हमरा जे कन्यादान अछि तकर की होयत ।'-कलाधर बाबू कनौन होइत जिज्ञासा कयलनि।

-'अहाँक धी-बेटी हमरो धी-बेटी अछि, जाउ ओकरामे पहिने संस्कार दियौक, मैथिलीकेँ मुम्बईमे सेहो पहिचान दियौक, स्थान दिअबियौक। मिथिलाक बेटीकेँ 'मैथिली' बना कऽ आनू । अगिला शुद्ध धरि उनटन नहि भऽ जेतैक कलाधर जी। जावत अहाँ परिष्कार नहि करब हमर वहिष्कार जारी रहत। अहाँ मैथिलीकेँ अंगीकार करू हमर बिग्रेड अहाँकेँ स्वीकार करत।'

एतवा कहैत करिया कक्का छाता उठौलनि आ चलि पड़लाह सड़क दिस। कलाधर बाबू हुनके दलानपरसँ हुनका जाइत टुकुर टुकुर देखैत रहलाह।

◆

योगाक भूत

पंचायत चुनावके हुलिमालिसँ त्रस्त भऽ करिया कक्का पतनुकान लेबऽ लेल व्यग्र भऽ उठलाह। एहि व्यग्रताकेँ आर बल भेटलैक जखन हुनक पंचायत महिला क्षेत्र घोषित भऽ गेलनि। आब ओ अवसरक ताकमे लागि गेलाह जे कखन गामसँ लंक लऽ भागी। इहो अवसर तुरंते भेटि गेलनि जखन जेरक-जेर स्त्रीगण आबय लगलनि आ सभ एकातियेक आग्रह करनि। काकी ई लीला सभ देखि अपस्यांत भऽ उठलीह। भोर-सांझ कक्काकेँ ताना मारय लगलथिन। कक्का सोचमे पड़ले रहथि कि मनमाफिक खबरि भेटलनि।

पटनाक अशांत नगरीमे हाथ धोयबा लेल एकटा संतक आगमन भेल रहनि। ओ योगकेँ योगा बना पटनावासीकेँ भोर-सांझ एकटा साधल मदारी जकाँ नचा रहल छलाह। करिया कक्काकेँ एहि संतकेँ देखबाक इच्छा भऽ उठलनि। ओ चुपचाप काकीकेँ संग लऽ रतुका गाड़ीसँ पटना विदा भऽ गेलाह मुदा वीरेनकेँ पटना पहुँचबाक सूचना देनाइ नहि बिसरलाह।

मुदा हाय रे कपार! पटना जंक्शनपर पहुँचिते जे दृश्य देखलनि ताहिसँ अचंभित भऽ उठलाह। फलक दोकानपर सजमनि टांगल देखलनि। ढाकीक ढाकी तुलसीपात बिकाइत देखलनि। काकी सेहो असहज भऽ उठल छलीह। जहाँ-तहाँ एकटा साधुक आदमकद फोटो टांगल देखलनि। ओ छगुन्तामे पड़ल छलीह एहि कारणे जे ओ बरमहल सुनल करथि जे पटनामे अनेरे मौगी-छौंड़ी उमकैत चलैत छैक आ ओकर गमकैत शरीरक सुगंध लेबा लेल छौंड़ा सभ मड़राइत रहैत छैक मुदा, एतऽ तँ दोसरे ताल छैक। छठिक भोरुका अर्घ्य दिन जकाँ गोल-मटोल, टटायल-सुखायल, भुट्ट-नमगर पुरुष-मौगी गांधी मैदान दिस पड़ायल जा रहल छल। ई दृश्य देखि कक्का आ काकी दुनू एक दोसरा दिस देखि फेर सड़क दिस देखय लागथि।

दुनूक भक् तखन टुटलनि जखन वीरेन लग आबि टोकलकनि--कखन अयलहुँ कक्का? हम तँ स्टेशन सँ ताकि-हेरि डेरा आपस जाइत छलहुँ।'

-करिया कक्का वीरेन केँ झोरा थम्हबैत सांस छोड़लनि। की कहियह, जकरे ले मारि कयलहुँ सैह पड़ल बखरा।

'से की कक्का-वीरेन उत्सुकतावश पुछलक।'

'हौ, जाहि त्वंचाहंचक डरे गामसँ पड़यलहुँ से तँ एहिठाम पहुँचिते दर्शन होमऽ लागल अछि। आगां की-की देखब से नहि जानि। हे-हे, वैह देखह-सेव, अंगूरक दोकानमे आब सजमनि आ तुलसीदल बिकाइत छह। ई की ताल छैक-कक्का बाजि उठलाह।

-'ओह, ई देखि अहाँ आश्चर्यमे पड़ल छी कक्का। ई तँ गांधी मैदानमे आयल योगा बाबाक कमाल छनि जे अपन औषधि संग-संग एहू सभ वस्तुक दाम अकास ठेका देलथिन अछि।' वीरेन कक्काकेँ बुझौलकनि।

'हौ सजमनि आ तुलसीदलक दाम कोना आकास ठेकतै! ई कोनो सोना-चानी छै की? ई तँ सभक बाड़ी-झाड़ी मे होइ छै।-कक्का कड़कलाह।

'कक्का ई कोनो कि गाम-घर छै जे सभकेँ सहजे भेटि जेतै। एतऽ तँ दलान आ आंगन ककरो भेटिते ने छै आ बाड़ी-झाड़ीक बात करै छी अहाँ। हमर आगत संत ई बुझैत छथिन तेँ अपने अगवे मोटर कारसँ चलैत छथि, एयरकंडीशनमे रहैत छथि, दूध-मेवा खाइत छथि आ लोककेँ सजमनि-तुलसीपात खयबाक सलाह दैत छथि। -वीरेन कक्का केँ कने आर चढ़बैत बाजल।

कक्का लोहछैत बाजि उठलाह-तखन पहिने गांधीये मैदान चलह, वासापर बादमे जायब। पहिने देखिये आबी जे आगत संत किछु निवेश करय अयलाह अछि की एहीठामक किछु निर्यात करबाक व्योंतमे छथि।'

काकी चुपचाप दुनू गोटेक गपशप ओहिना सूनि रहल छलीह जेना गामघरक महिला प्रत्याशी चुनाव मे पति, देयोर आ ससुरक संभाषणक बीच क्षेत्रमे भ्रमण करैत सुनैत रहैत छथि। कक्का आ वीरेन दुनूमे सँ किनको सोह नहि रहलनि जे काकी केँ दिनचर्याक किछु बेगरतो छनि। दुनू गोटे काकी केँ झोरा-झोरी पकड़ा सड़कक कतबहिमे पुरुषोचित उजास पाबि चलि पड़लाह पयरे गांधी मैदान दिस।

गांधी मैदानमे अद्‌भुत दृश्य छल। करीब तीस-पैंतीस हजार लोक योगाभ्यासमे लीन छल। कैकटा दोकानमे औषधि बिका रहल छल। कैक ठाम पतियानीमे लागल लोकक स्वास्थ्य परीक्षण कऽ रहल छलाह वैद्यजी लोकनि। कतहु योगाभ्यासक पोथी बिकाइत छल तँ कतहु 'बाबा'क फोटो बिका रहल छल। सर्वत्र टाका-पैसाक बाजार गर्म छल। कक्का ई सभ देखि भौंह चढ़बैत बजलाह-'चलह वीरेन पहिने हम सभ एहि योगा शिविर मे हाथ धो ली तखन आगाँ देखल जयतैक।'

वीरेन कहलकनि-कतेकवला टिकट लेबैक कक्का-500, 1100 आ कि 2100 टाका वला।'

कक्का गरजलाह-की बजलह-टिकट! ई स्वास्थ्य शिविर छै कि टैक्स असूली शिविर! हौ, ई तँ हद्द भऽ गेल। डाकदर मांगय तँ बुझलहुँ, ई संत कथीक असूली करैत छथि?'

'कक्का आखिर सामूहिक स्वास्थ्य लाभक बात छै। एके संगे पुरुष-स्त्रीगण अंग संचालन करै जाइ छै। तै ले जे व्यवस्था भेल छै ताहिपर खर्च भेल छै। से संत महात्मा कहाँसँ देथिन। ओ तँ मात्र एकटा खराम आ भगवामे आयल छथिन। शिविर बनबऽवला लोकसँ असूली नहि करतै तँ कतऽसँ देतै।'-वीरेन कक्काकेँ बुझयबाक प्रयास कयलक।

करिया कक्का सुस्त होइत बजलाह-'चलऽ जखन उखड़िमे मुंह दइये देलहुँ तँ चूरयबाक की डर। लैह टिकट आ चलह शिविराश्रमक अन्तः पुरमे।

काकी अछताइत-पछताइत कोनहुना भीतर घुसलीह। सोझांमे जे दृश्य अयलनि से देखितहि मुँहकेँ आंचरसँ झांपि चिचिया उठलीह-'माय

गे माय! आब बुझलहुँ जे अहाँ पटना किए अयलहुँ! गाममे मोन नहि भरल तँ एहिठामक मौगिया सभकेँ चितान पड़ल देह डोलबैत देखय अयलहुँ अछि। हम एकोक्षण नहि रहब एहिठाम।'

ई कहैत काकी चोट्टहि प्रवेश द्वारि दिस बढ़लीह। वीरेन बौंसैत कहलकनि-'काकी ई सभ योगा कऽ रहल छैक।'

'हँ हौ, हमरे सिखबैत छह। ई सभ योगा-योगी नहि सोझे नुमाइस छैक। ई बबजिया प्रवचन सँ ई नहि कहि सकै छै जे जाँत चलाउ, उक्खड़ि-मुस्सरि चलाउ आ कि मक्खन महू अपना अपना घरमे एहि पिट्ठा सन-सन मौगिया सभकेँ जे देह सोंटल रहतै। ई मुँहजरूआ बैसल-बैसल अपनो रस लैए आ सार्वजनिक रूपेँ मौगी सभकेँ नचा-नचाकऽ योगा-योगक रंगताल धरैए। हौ, सभ जँ अपन-अपन घरक काज करय, कुटिया-पिसिया करय तँ एहन योगीक ई योगाक नाटके घुसरि जयतनि।-काकी क्रोधे थर-थर कंपैत बजलीह।

वीरेन काकी केँ परबोधैत कहलक-अहाँ नहि बुझैत छिऐ एहिसँ रोग सभ...।' वीरेन जाबत आगाँ किछु बाजय काकी प्रवेश द्वारसँ बाहर निकलैत बाजि उठलीह-हौ, तोरे सभकेँ नीक लगतह पाइ दऽ ई खेल देखऽ मे। पठा दैह ई मोचंडी सभकेँ हमरा गाममे, दसे दिनमे देहक गर्मी आ चर्बी नहि झारि देलियनि तँ हमरा नामपर कुकुर पोसि लिहऽ। किदन तँ कहै छै-बड़-बड़ गेली तँ नाढ़ो एलीह, सैह परि एहिठाम देखै छी। जा कक्काकेँ बजाबह तुरत।'

वीरेन सिटपिटाइत पुनः प्रवेश द्वार दिस ढुकबा लेल गेल मुदा दरबान घुसय नहि देलकै। ओ ओहीठाम मड़राइत रहल। ने काकी लग गेल आ ने प्रवेशे कऽ सकल। बड़ी काल बाद करिया कक्का मुँह लटकौने बाहर निकललाह। वीरेन टोकलकनि कैक बेर मुदा ओ 'हां-हूं' टा करैत रहलाह।

ओ मोने-मोन सोचैत रहलाह-ई संत नहि अवसरवादी अछि। स्वास्थ्य लाभक नामपर ठगैती कऽ रहल अछि आ सेहो सार्वजनिक रूपेँ। मोन मे अयलनि जे चिचिया-चिचिया कऽ सभकेँ कहथि-खड़ाम

आ भगवावलाक ईशारा सँ जिनगी सुखमय नहि बनैत छैक, जिनगी बनैत छैक सक्रियतासँ, मोनक शुद्धता आ अनुशासनसँ। मुदा ओतुक्का बावातरण देखि ओ गुम्मे रहलाह। कारण एहि अपार भीड़मे सभ अपन-अपन हाथ धोबा लेल अपस्यांत बुझयलनि। मंचपर बैसल संतसँ लऽ कऽ योगा-योगी करैत पुरुष-स्त्रीगण सभ। ओ ओतऽसँ चुपचाप वीरेन संग बासापर जयबा लेल विदा भऽ गेलाह। हुनका एकोरत्ती इहो सोह नहि रहलनि जे ओ काकीकेँ सेहो संग अनने छथि।

दोसर दिस काकी छगुन्तामे पड़ल छलीह जे योगाक भूत हुनका पर एना किएक सवार भऽ गेल छनि जे चुप्पी लधने छथि।

◆

बजार-भाव

करिया कक्का अखबार पढ़ैत-पढ़ैत चिहुँकि उठलाह। चश्मा सोझ कऽ ओ फेर ओहि हेडिंगपर आँखि गड़ौलनि। खेरहीक बाजार-भाव पढ़ि चिन्तित भऽ उठलाह-45 टके किलो। खिच्चड़ियोपर आफत।

फेर दोसर समाचारपर नजरि गेलनि-टेलिफोन पर बात करबाक दरमे भारी कमी। मोन कने आश्वस्त भेलनि-चलू, कतहु गप्प करबाक होयत तँ किछु सस्तेमे निमहि जायब।

तावत तेसर समाचार पर नजरि पड़लनि-मटिया तेल पर 11 टके लिटर दाम बढ़त। फेर ओ मुँहे भरे खसलाह-ई की? एखने हाट पर तीन दिन दौड़ैत छथि तँ 35-40 टके भेटैत छनि तँ घरमे कने इजोत कऽ लैत छथि। की आब तीसो दिन अन्हरियेक भोग भोगब? किछु-किछु सोचय लगलाह ओ। फेर माथ झटकि कऽ आन समाचार देखय लगलाह। मुदा जे पन्ना ओ आगां मे पसारने छलाह से बाजार भाववला छलैक। कने आँखि नीचाँ कयलनि कि मोटका अक्षरमे लिखल भेटलनि-सोना अपन चमकमे सर्वाधिक वृद्धि कयलक। माने 19 हजार टके भरिक भावपर कूदि कऽ चढ़ल। मोन पड़लनि अपन दिन। बाबूसँ चोरा कऽ कनियाँ लेल एकटा आठ आना भरिक औंठी किनने रहथि अस्सी टकामे। ओ दिन सपना सन लगलनि। भेलनि आब बिनु चोरि-चमारीक सोनक सुख ककरो मनकेँ नहि भेटतैक।

करिया कक्का एही मानसिकताकेँ नेने पूरा पन्नापर बेरा-बेरी दृष्टि दौड़ाबऽ लगलाह-गहूम-दालिमे गर्मी, जीर-मरीचमे उछाल, मेरचाइ लहकल, लहसून-प्याज मस्त, आलूमे तेजी, गैस बढ़ल, कार-मोटर खसल, कम्प्यूटरक पूर्जा पाटमे नरमी आदि पढ़ैत-पढ़ैत कपारक नस तना गेलनि आ पन्ना मोड़ैत सुस्तयबाक उपक्रम करय लगलाह। अखबार रखैत जहाँ दृष्टि बाहर दिस फेरलनि तँ सामने सँ घूटरकेँ अबैत

देखलनि। –की कक्का, बड़ी सकाले आइ अखबार निपटा देलिऐ?'घूटर चौकीपर बैसैत पूछलकनि।

'हौ, की पढ़ब आब अखबार। देखैत नहि छहक गर्मीक ताव, एहिना माथ गरम रहैए आ ऊपरसँ अजुका अखबार तेहन ने गर्मी झोंकलक अछि जे देहो गर्म भऽ गेल अछि। –करिया कक्का लोहछैत बजलाह।

–आइसँ अखबारक दाम बढ़ि गेलैक अछि ताहिसँ व्यथित छी की?' घूटर हाथमे अखबार उठबैत बाजल।

–'की कहलऽ, ईहो तरंगि गेलह। एकरो बजार-भावक सनक सवार भऽ गेलै से तँ देखबे ने कयलिअइ।–करिया कक्का गुम्हरलाह।

–'की करबै कक्का, सौंसे संसारमे भावक उछाल छै, जेम्हरे देखू तेम्हरे ई हाल छै। सोना, चानी, पेट्रोल, गैस, किरासन, डीजल सभक भावकेँ उछाहने छै। जेँ ई सभ बढ़ै छै तेँ सभ कथुक दाम अकाश ठेकल जाइ छै।' घूटर कक्काकेँ बुझबऽ चाहलकनि मुदा ओ तँ आर बमकि उठलाह– ऐँ हौ बजारक सीधा नियम छै जे जे वस्तु कम रहै छै तकर दाम बढ़ै छै। मुदा से कहाँ देखै छिऐ। सभ दोकानमे जते चीनी चाहबह, भेटि जयतह, जते दालि चाहबह भेटि जयतह। तहिना पेट्रोल की डीजल, सोना की चानी आ की गहूमे आ आर सभ वस्तु भेटि जयतह, तखन ई महगी किएक?'

–से बात नहि छै कक्का, जेना-जेना लोकक जीवन स्तर उठै छै, महगी बढ़ैत जाइत छैक। ई तँ छै ने जे आब टाका अछैत लोककेँ कष्ट नहि हेतै।' घूटर फेर कक्का केँ कने परबोधबाक प्रयत्न कयलक।

'सैह-सैह ने कहऽ जे आब टकावला मनुक्ख सुख भोगय आ गरीब गुरुआ भूखे मरय। हौ, हम पुछैत छिअऽ कम्प्यूटर सस्ता होअय, टी.बी. फ्रीज सस्ता होअय, मोटर कार सस्ता होअय, रेलगाड़ी मे ए.सी क्लास सस्ता भऽ जाय आ फुटहा 60 टके, सातु-55 टके, दालि 50-55 टके, किरासन 40 टके लिटर, चीनी 35-36 टके, आर तँ आर नवका गहूमक फसिल खढ़िहान सँ अबिते बारह तेरह सय रुपैये क्वींटल भऽ जाय ई कोन बजार भाव भेलै। जतेक गरीबहाक वस्तु होअय से अकास

ठेकल जाय आ जे धनिकहाक वस्तु होमय से सस्त भेल जाय। –कक्का बजैत-बजैत हकमऽ लागल छलाह।

–की करबै कक्का व्यवहारेसँ ने वस्तुक दाम बढ़ै छै। आब देखू ने अपना देश मे सभसँ बेसी बाते बिकाइए। लोक अग्रिम पाइ दऽ बात करबा लेल समय कीनइए। मोबाइल संस्कृति लोकक जीवन बदलि देलकैए से नहि देखै छिऐ?' घूटर बात बदलैत बाजल।

कक्का सेहो लाइन बदलैत बजलाह–तँ भोगह एहि संस्कृतिक मजा। दूधक दाममे पानि कीनि कऽ पीयह। राहरिक दालिक भाव मे मसुरीक दालि खाह। पेट्रोलक दाममे किरासन कीनह। किसमिसक दाममे बदाम कीनह। जीयब तँ की-की ने देखब।'

'से बात नइं छैक कक्का, विकासक युग छैक, विकास हेतै आ बजार-भाव नहि बढ़तै से कोना होयतै। एकर प्रभाव तँ दोसर पर पड़बे करतै।' घूटर कने दार्शनिक अन्दाजमे बाजल।

कक्का सेहो मांजल दर्शन शास्त्री-समाजशास्त्री जकाँ फेर चालू भऽ गेलाह –तोँ नहि बुझबहक एहि महगीक कारणकेँ, एकरा क्यो-क्यो बुझि सकैए। आ जे बुझि लैत अछि ओ एकरा रोकबाक प्रयासो कहियो नहि करत?'

–से किए कक्का–घूटर कक्कापर प्रश्नक तीर छोड़लक।

–हौ, एखनुका युगपर सुविधाभोगीक कब्जा छैक। ओ ततेक ने सुविधा भोगि लेलक अछि जे आब शान्ति पयबाक प्रत्याशामे गरीबहाक जीवनक अनुशरण कऽ रहल अछि। काजू-अखरोट नहि पचैत छैक तँ फुटहा खाय लागल अछि। खोआ मलीदासँ अपच होमऽ लगलैक अछि तँ सातु पीकऽ गैससँ बचबाक प्रास कऽ रहल अछि। कहबाक अभिप्राय जे बेस धनक अछैत ओ नीचां दिस आबि रहल अछि। आ नीचांवला लोक ओकरा जकाँ सुख-सुविधा जुटयबा लेल आफन तोड़ि रहल अछि। मुदा जेँ कि सक नहि छैक तेँ ठामहि बपहारि काटि रहल अछि। परिणाम ई भऽ रहल छैक जे चोट गरीबहाक वस्तुपर बेसी पड़ि रहल छैक। ओकर वस्तुक दाम अकास ठेकल जाइत छैक आ धनिकहाक वस्तुक दाम घटि रहल छैक।'

—से कोना मानब कक्का! सोना, चानी आ कि पेट्रोलक जे दाम बढ़ि रहल छै ताहिसँ तँ वैह ने प्रभावित होयत, गरीब नहि ने।'—घूटर कक्काक बात कटलक।

—यैह-यैह तँ नहि बूझि सकबह तोँ सभ। सतुआ आ फुटहाक मोटर-कारपर घूमब आ कि दूध पानिक दाम एक होयब की कहैत छैक? यैह ने जे बाजार-भावक ऊँच-नीच आब ने अभावसँ होइत छैक आ ने गुणवत्तासँ। एकर निर्धारण देखाउस कयनिहारक जनसंख्यासँ होइत छैक। जे वस्तु लोक बेसी उपयोग करतैक तकरेसँ ने बेसी असूली होयतैक। आब तोंही देखि लैह, पेटमे फुटहा नहि आ कानमे मोबाइल सटयबाक चस्का की कहैत छैक?'—कक्का घूटर दिस तकलनि।

—ई तँ युगक मांग छैक।'—घूटर बाजल।

—युगक मांग छैक तँ कथी लेल बजार-भावपर लेसने रहैत छह। अरे, धनिकहाक वस्तु महग होअय की सस्त ओ कीनबे करत। मुदा तोहर उपयोगक वस्तु महग होयतह तँ की तोँ कीन सकबह? एखन दतमनि कीनैत छह, खरिका कीनैत छह, फूल कीनैत छह, पात कीनैत छह आ जँ यैह रंगताल रहतह तँ की-की ने कीनय पड़तह। आ हे, जहिया एहिसभसँ अकछा कऽ जीवन लीला समाप्त करबाक इच्छा हेतह तँ डूमऽ जोगर पानियो किनहे पड़तह।'

ई कहैत करिया कक्का लोटा लऽ जल आनऽ आंगन दिस विदा भऽ गेलाह। घूटर अखबार मे छपल ओ समाचार पढ़य लागल जाहिमे आशंका व्यक्त कयल गेल रहैक जे अगिला विश्वयुद्ध पानिक मूल्यवृद्धिसँ उत्पन्न समस्याक कारणे होयत।

◆

गोबरगणेश

करिया कक्का दलानपर बैसल जनउ गेठिया रहल छलाह आ कोनो भजन गुनगुना रहल छलाह। भीतरसँ छोटका बेटा विजय हाथमे साइकिलक चाभी नचबैत निकलल। ओकरा देखिते कक्का टोकारा देलथिन—की बाबू साहेब, आइयो नहि मानबै। सांझमे सत्यनारायण कथा हैत घरमे आ अहाँ चललहुँ टहलान मारय।''

विजयक पैर ठमकि गेलै। ओ एक बेर पिता दिस तकलक आ फेर भीतर दिसक कोठलीमे झंकलक जतय माय किछु-किछु बजैत ओकरे दिस ताकि रहल छलीह। ओ विजयकेँ ठमकल देखि केबाड़ लग आबि बजलीह—किए रूकि गेलें रौ! जो आनि कऽ राखि दही, निचैन भऽ जायब हम।'

—की आनऽ लेल पठा रहल छिऐ—करिया कक्का पूछि देलथिन।

गृहिणी लोहछैत कहलथिन—पठा रहल छिऐ झंझारपुर, गोबर आनऽ लेल। रातिमे 'गणेश' कथी सँ बनाओल जेतै।'

—'की अपना गाममे आब गोबरक अकाल भऽ गेलैए जे झंझारपुर जाइ छै।''—करिया कक्का सेहो ओहिना लोहछैत बजलाह।

—हँ यौ, अहाँ गाममे आब गोबरो निपत्ता भऽ गेल, खाली गोबर गणेश सभ बचि गेल अछि।' ओ आर लोहछैत बजलीह।

करिया कक्का डपटैत कहलथिन—किसना ओहिठाम पठबियौ ओकरा ओतऽ मालजाल छै। भेटि जेतै गाममे।'

गृहिणी मुँह दोसर दिस घुमबैत कहलथिन—तँ की आब सत्यनारायण पूजामे सांढ़ेक गोबर सँ गणेश बनथिन।'

करिया कक्का नरम पड़ैत विजयकेँ कहलथिन— जो रे जो, जे माय कहैत छौक, सैह कर। हमर बातक तँ मोजरे नहि अछि।'

करिया कक्का विजयकेँ जयबाक स्वीकृति दऽ तँ देलथिन मुदा अपने स्वयं गंभीर चिन्तामे पड़ि गेलाह। हुनका मोन पड़य लगलनि ओ दृश्य सभ जे दू-तीन बेर बाढ़िक समयमे देखना गेल छलनि।

–यौ बाबू, कने हमर मालकेँ नावपर चढ़ा लिया यौ। यौ, ई भासि जायत तँ हमर रोजी-रोटी छिना जैत यौ।' किसना एहिना कते काल तक कनैत रहल, कलपैत रहल मुदा क्यो ओकर दारुण हाक्रोशपर कान बात नहि देलक। पानि गुंगुआइत बढ़ैत गेलै आ एक्के बेर किसना बिनु किछु बजने अपन गायक डोरी छोड़ि कनैत ओकरा गोर लगैत गाछ पर चढ़ि गेल छल। देखैते-देखैत ओकर पशु कतऽ दहा कऽ चलि गेलै से पतो नहि चललै।

–'कथीक सोच लऽ कऽ बैसि गेलिऐ। बाड़ी मे केरा छलै, लतामो छलै। फल-फूल तँ भऽ गेलै, कने दूधक इंतजाम कऽ दितियै घोरुआ परसाद भऽ जइतै।' विजयक माय कक्का केँ निश्चिन्त बैसल देखि टोकारा देलथिन।

करिया कक्का अपनामे लौटैत अनमनस्क भावेँ बजलाह–अहीं कहै छी जे हम गोबरगणेश छी आ फेर कहैत छी जे दूधक इन्तजाम कऽ दिअऽ!'

–'तँ हमरा जे बेगरता हैत से अहीं केँ ने कहब आ कि आबो अपन नैहरे केँ समाद देबै।' गृहिणी चौल करैत बजलीह।

करिया कक्का हुनकहि बातपर तह दैत बजलाह–आर उपाये की अछि। लगेमे नैहर अछि, दौड़ा दियौ ककरो। ओतऽ तँ कमसँ दू टा लगहरि रहिते अछि। अहाँक सत्यनारायण भगवानो प्रसन्न हेताह 'गोबर गणेशो' (स्वयं दिस इंगित करैत) क इज्जति बाँचि जेतनि।'

करिया कक्का एतवे बाजल छलाह कि गृहिणी हिचुकैत कहऽ लगलथिन–अहाँकेँ बूझल नहि अछि जे परुकेँ हमर वैद्यनाथ अपन पशुकेँ बचबऽमे अपने ओकरा संगे दहा गेल।'

करिया कक्का अफसोच करऽ लगलाह जे किए ओ चौल कऽ देलथिन। हुनका मोन पड़य लगलनि ओ घटना जे कोना हुनकर दुलरुआ सार महीसकँ बचबैक क्रममे ओकरे संग बाढ़िक भेंट चढ़ि गेल रहनि आ सभ किछु दहा जयबाक कारणे ओकर श्राद्धकर्मसँ निवृत होयबा लेल बचलाहा पशु सब कोना बाहरी पैकारक हाथें कौड़ीक मोल बेचय पड़ल रहनि हुनकर ससुरकेँ। हुनकर ससुर गामघरक सुखी सम्पन्न लोक सभकेँ, नेता सभकेँ बड़ नेहौरा विनती कयलथिन जे कोनहुना गामक पशु गामे रहि जाय मुदा क्यो 'चारा'क बहन्ने तँ क्यो कोनो बहन्ने हुनकर नहि सुनलकनि। अंतमे ओ हारिकऽ गामक मुखिया गौरी बाबूकेँ सेहो नेहोरा-पाती कयलथिन जे ई लछमिनियां गाय-नेरूकेँ वैह राखि लेथि मुदा ओहो गोबरगणेशे निकललथिन। चुपचाप सुनैत रहलथिन। अंतमे हारिकऽ ओ पैकारक शरणमे गेलाह आ ओ जे देलकनि सैह लऽ कर्मक्रिया सम्पन्न करौलनि। करियाकक्का केँ मोने छनि ओ बात जे सासुरक हुनकर सहलोला खबास कहने रहनि–'नइं जनै छिऐ मिसरजी, मुखिया पशु सभक बिक्रीमे पैकार सभसँ 200 टके हिसाबसँ कमीशन लै छै तखन पशु गामसँ बहराइ छै।''

साइकिलक घंटीक स्वरसँ जखन करिया कक्का अपनामे लौटलाह तँ पत्नी आँगनमे जा चुकल छलथिन आ विजय ओलतीमे साइकिल टुनटुनबैत मायकेँ बजा रहल छल। ओ पुछलथिन–की रौ, बड़े जल्दी आपस भऽ गेलें।'

–हँ बाबू लखना रास्तेमे भेटि गेल। ओकरो ओतऽ आइ 'कथा' छैक। ओ कतहुसँ गोबर लऽ कऽ अबैत छल। ओहीमेसँ थोड़े दऽ देलक तेँ रस्ते सँ घुरि अयलौं।'

'आ ओहि पोलीथीन मे की छौक ?'

–बाबू एहिमे पाउडर वला दूध छै। लखना कहलक जे ईहो लैए ले तखने गाम जइहें ने तँ फेर दूधक बहन्ने सभ दौड़ा देतौ। ओ 200 ग्रामक पैकेट अपने लेलक आ हमरो दिया देलक।' विजय सपाट स्वरमे ई सभ कहि सुनौलक।

–अयं रौ ई पाउडरक दूधसँ पूजाक प्रसाद बनतै'–विजयक माय ओतऽ पहुँचैत विजयकेँ दमसाबऽ लगलीह। विजय सेहो खखुआइत बाजल–गोबरक गणेश बनबऽ लेल प्राण जाइत छलौ आ पाउडरक दूध सँ परसाद बनबऽसँ भगवान बिगड़ि जेथुन, नइं।''

विजयक माय विजय पर तमसाइत हाथ उसाहैते छलथिन कि मुखियाजी सड़कपरसँ करिया कक्काकेँ हॉक दैत दलान दिस टघरलथिन–की कक्का सभ सरंजाम भऽ गेलै की किछु बचलो छै!''

विजय मायकेँ कचकचबैत बाजल–ले आबि गेलथुन गामक 'गोबर गनेश'। आब भऽ जेतौ तोहर पूजापाठ–ई कहि ओ ओतऽ सँ घसकि गेल आ विजयक मायक हाथ ओहिना हवामे उसाहले रहि गेलनि।

◆

अहाँ की करबै?

दिनमे जे झगड़ा केलिऐ, रातिमे मजा चखा देलकै
संगमे सूतऽ के सुतबे केलकै, बीचेमे छौंड़ा सुता देलकै।'

सांझमे जखन 'सौभाग्य मिथिला' मे ई गीत करिया कक्का सुनलनि तँ मोन माहुर भऽ उठलनि। ई कोन गीत भेलै जे डंका पीटि कऽ सौंसे संसारकेँ सुना देल गेलै। एहिना साँय-बहुमे झगड़ा होइ छै आ मिलान होइ छै । घरक भिरतका बातकेँ एना मिचरा-मिचरा कऽ फरिछा-फरिछा कऽ सुनयबाक की बेगरता। दाम्पत्य जीवनमे बहुत एहन बात होइ छै जे पति-पत्नीये टा मात्र ओकर साक्ष्य होइछ। मुदा ई टी.वी. वला सभ आब दाम्पत्यो जीवनमे झांकऽ लागल अछि। टी.वी.क एहि छिच्छापर ओ आर किछु आगाँ सोचितथि ता काकी भोजन लेने उपस्थित भऽ गेलथिन।

–कथीक गुनधुनमे लागल छी एहिखन । भोजन-भात करू आ आरामसँ सुतू गऽ–काकी सोझांमे थारी रखैत कहलथिन।

'ओ अहूँ ने ओ गीत सुनने रहियै, तेँ एहन बोल मारि रहल छी–करिया कक्का बजलाह।

–हँ यौ सुनने रहियै, तकर माने की! हम सभ बहुत किछु सुनै छिऐ मुदा अहाँ सभ जकाँ कोनो बातकेँ बेकछाबऽ नहि लगै छिऐ। अहीं पुरुष सभक चालि अछि जे जहाँ मोनक बात नहि भेल की ढ़ोलहो पिटऽ लगलहुँ चाहे ओकर परिणाम किछु भऽ जाओ।–काकी तुरछैत बजलीह।
–'हमहूँ तँ सैह कहैत रही जे एहि तरहक गीत अहाँकेँ नीक नहि लगबाक चाही। आधा आबादीक विरोधक बात छै।' –करिया कक्का शान्ते भावसँ बजलाह।

–'हे यौ एकटा बात कहू।' काकी कक्का दिस तकैत बजलीह।

–बाजू ने बाजू। जे कहबाक हो निधोख भऽ कहू। एहिठाम

अछिये के तेसर। एहिठाम तऽ हमरे अहाँक 'राज-सुराज' अछि।' करिया कक्का मुह मे कौर रखैत बजलाह।

—कहलहुँ ई जे स्त्रीगणमे जे धैर्य, काजक प्रति निष्ठा आ लगाव होइत छैक से पुरुषमे कतऽसँ हेतैक। ओ तँ एके छड़पानमे झंडा गाड़य जनैत छैक आ से जँ नहि भेलैक तँ एहिना कोनो गप्पकेँ उछाहऽ लगैत छैक।'

काकी किछु आर बाजय चाहैत छलीह की कक्का कौरकेँ सोझे गिड़ैत भभकि उठलाह—छी तँ अहाँ स्त्रीगण मुदा बजबा कालमे निट्ठाह लालू प्रसाद बनि सोझे जातियेपर उतरि जाइत छी। यै, बिना कोनो जाति—मौगी कि पुरुष, तहिना उच्च वर्ग की नीच वर्गक बात कयने सोझे सोझ जे मुद्दा छैक ताहिपर गप्प नहि कयल जा सकैत छै की? हम कहलहुँ दाम्पत्यक बात तँ अहाँ पुरुषे जातिपर उतरि गेलहुँ।'

—किएक ने उतरब यौ! अहाँ पुरुषक मोनक बात नहि भेल तँ गीत गढ़ि टी.वी. पर लोककेँ सुना देलिऐ। कनेको दम नहि धयल भेल। पत्नी माने खेलौना भऽ गेल जे चाभी दियौ कि नाचय लागय सैह ने।' काकी गरमाइत बजलीह।

—'नइं यै, हम से नहि कहै छी। हम कहै छी जे एना किएक ने होइ छै जे घरक बात बाहर नहि जाय।' कक्का काकी दिस तकैत बजलाह।

— से कोना हेतइ। फेर हम कहब तँ अहाँकेँ लागत। स्त्री जातिकेँ पुरुष पात ततेक ने दबने रहलैए जे आब ओहो कनेको अवसर भेटलापर नहि चुकै छै।' काकी गंभीर होइत बजलीह।

कक्का काकी दिस मुस्कुराइत तकैत पुछलथिन—नहि बुझलहुँ, बुझाकऽ कहू ने।'

—सतरह दुनियाँ देखै छी अहाँ आ बुझऽ हमरासँ चाहैत छी। देखि नहि रहल छिऐ शिक्षाक हाल। हमरा ने घरमे सैंत कऽ रखलहुँ। एखन कनेके घर सँ लड़की पढ़ऽ लेल बाहर भेल अछि तँ बाउ सभक चमकी खतम भेल जाइत छनि। एखन की देखलहुँ अछि, एखन तँ

मैट्रिक आ आइ.ए.,बी.ए.क ई हाल अछि। जँ लड़की दल सभ नोकरीपर हमला करत तखन बुझबै जे की हाल होयत अहाँ सभक।'

काकी कनिये बातमे बड़का बात कहि देने रहथिन। कक्का चोटा गेलाह। बाजि उठलाह—अहाँ यैह ने कहऽचाहै छी जे लड़का सँ बेसी प्रतिभा लड़की सभ देखा रहल छै। अच्छा अहीं कहू जे ओ ककरा बलें ई कऽ रहल छै, (रुकैत) पुरुषे बले ने। जाबत पुरुष-पात मदति नइं करतै ताबे ओ बढ़ि सकतै?—कक्का फेर प्रश्नवाचक दृष्टिये तकलनि।

—हँ, से बात तँ छै, जावत माय-बाप दुनू नइं चाहतै तावत ई संभव नहि छै।' काकी हथियार रखैत बजलीह।

कक्का चटनी चटैत बजलाह—अहीं सभ ने बेटीकेँ साधि कऽ रखै छिऐक। भोजनमे की पहिरन-ओढ़नमे, एते धरि जे बेटामे आ बेटीमे व्यवहारो दू तरहक करैत छिऐ। हरदम ओकरा बोध करबैत छिऐ जे तों बेटी छें एना नहि कर तँ ओना नहि करऽ। आर तँ आर बेटी-पुतहुमे सेहो अहीं सभ भेद करै जाइ छिऐ। बेटी अछि तँ दुलारू आ पुतहु भेल तँ भारी। आ कि नहि।'

कक्काक बात सुनिते फेर काकी लोहछि उठलीह—अहाँ तऽ खाली स्त्रीगणक दोषे-दोष तकैत छिऐक, नीक थोड़बे भेटत।

कक्का चौल करैत बजलाह—यैह नीक लागब तँ पुरुषक बड़का बाधक छै, से नहि जनै छिऐ।'

—की मतलब अहाँक'—काकी आँखि नचबैत बजलीह।

—हमर मतलब ई जे जेँ अहाँ नीक लगै छी तेँ ने हमर सरोसती घरमे मन्द रहैत छथि। बाहरमे छै ककरो मजाल जे हमरापर लगाम देत। (कने रूकैत) आ हे, अहाँ जे कहलिऐक जे कमे लड़की घरसँ निकललैक की बौआ सभक चमक मन्द भऽ गेलैक तकरो सैह कारण छैक। हाथी कतहु ऊँटक सोझां उमताय।'—कक्का नहुँएसँ बजलाह।

—अहाँक कहबाक माने ई जे स्त्री जाति पुरुषक बाधक छै, ओकरा बाहर नहि होयबाक चाही आ ने पढ़बाक—लिखबाक चाही।' काकी फेर ओतहि पहुँचि गेलीह जतऽसँ गप्प शुरू कयने रहथि।

—नहि यै, हमर कहबाक माने से नहि रहय। हम ई कहलहुँ जे लड़का-लड़की दुनू पढ़य-लिखय, दिन-दुनियांक अधिकसँ अधिक ज्ञान अर्जित करय। घर, परिवार, समाज देशक हितचिन्तक बनय। मुदा ई तखने ने संभव हेतै जखन ई सभ कयलाक बाद दुनू मे मिलान रहतै। से कहाँ देखै छिऐ!'

—से किए नहि रहतै। दुनू पढ़तै तऽ आर बेसी बुझतै।' काकी बाजि उठलीह।

—हँ, अहाँक कहल सत्ते सत्य होइतय तँ कतेक नीक होइतय। आइ अपनो बौआ—बौआसिन सुखसँ रहतथि।' कनेक काल चुप भऽ फेर कक्का बजलाह—बौआसिन दिल्ली रहैत छथि, बौआ कलकत्ता। हुनका अपन ऑफिसरी पर गुमान छनि तँ बौआकेँ अपन ऑफिसरीपर। एकटा इर घाट तँ दोसर बीर घाट। एक नदी भऽ कऽ दुनू दू किनारपर छथि।'

कक्का बजैत जा रहल छलाह आ काकी जे कने काल पहिने धरि कक्कासँ दू हाथ करऽ करबा लेल तैयार छलीह से चुपचाप बैसल छलीह आ आँखिसँ नोर खसल जा रहल छलनि। एकाएक कक्काक ध्यान काकीपर गेलनि तँ ओहो मर्माहत भऽ उठलाह। ओ गप्पक तोरकेँ फेर ओही लारनिपर दैत बाजि उठलाह—चलू जे होइ छै से नीके होइ छै। हम तँ निश्चिन्त छी जे कतबो अहाँसँ झगड़ा करब तँ अहाँ ओ काज नइं करब जे ओ मौगी कऽ देने छलै आ हारि कऽ ओकर साँयकेँ हल्ला करय पड़ल रहैक। बाजू ने हम जे झगड़ा करब तँ अहाँ की करबै?

—'कोन काज कऽ देने रहै ओ मौगी जे हम नहि करब।' काकी नोर पोछैत धीरेसँ बजलीह।

—वैह, बीचमे जे बच्चाकेँ धऽ देने रहै।- कक्का काकी दिस झुकैत धीरे सँ फुसफुसयलाह।

'धौर जो।' कहैत आँखिमे नोर नेने मुस्काइत काकी थारी उठा भनसाघर दिस विदा भऽ गेलीह। कक्का सेहो अंगपोछामे हाथ-मुँह पोछैत पीढ़ीपर सँ उठि शयन गृह दिस बढ़ि गेलाह।

◆

'बोर्ड लागल टाटपर, सूतल छी खाटपर

फगुआक आगमनक भान होइतहि गाममे हलचल मचल छल। नेना-भुटका रंग आ फुचकारीक जोगार धरयबा लेल घरे-घर फिरीशान छल। युवक मंडली कुंभीवला पोखरिकेँ साफ कऽ ओहिमे रड़धुम्मस करबाक व्योंत धरा रहल छल तँ किछु टोली भांग आ माजूमक लेल ठंढइक फेहरिस्त तैयार कऽ रहल छल। घरक मुखिया सभ अलगे नव-नव वस्त्रक आ आन वस्तुक सरंजाममे लागल छलाह। दाइ-माइलोकनि से पूआ-पकमान बनयबा लेल अपैत वर्तन-बासनकेँ मांजि चमका रहल छलीह आ गुनगुना उठैत छलीह-भरि फागुन बुढ़बा देवर लागे।' मुदा ईहो स्वर करिया कक्काकेँ नहि मोहि रहल छलनि। ओ अपन खाटपर पड़ल छलाह आ अर्र-दर्र बजने जा रहल छलाह—बोर्ड लागल टाटपर, सूतल छी खाटपर! बोर्ड लागल मैथिलक टाटपर, सूतल छी खाटपर.... . बोर्ड ....लागल.........टाटपर........खाटपर....।'

जीवछ एहि बेर तीन वर्षपर गाम आयल छल फगुआमे। ओ सगर गाम घूमि गेल मुदा करिया कक्का दर्शन नहि भेलै। जेम्हरे जाय तेम्हरे फगुआक तैयारी होइत देखय मुदा करिया कक्का निपत्ता। जे सभकेँ जोश दैत फगुआमे उमका दैत छलथिन, तनिका कतहु अभरैत नहि देखि व्याकुल भऽ उठल। ओ सुरफुरायल करिया कक्काक दलानपर पहुँचल। ओतऽ पहुँचि ओ जे दृश्य देखलक तँ सन्न रहि गेल। करिया कक्का खाटपर पड़ल एक्के वाक्य रटने जा रहल छलाह-'बोर्ड लागल टाटपर, सूतल छी खाटपर। बोर्ड लागल.....टाटपर.....सूतल.....छी. .....खाटपर।'

ओकरा किछु फुरेबे नहि करैक ई दृश्य देखि कऽ। किएक एखनेसँ करिया कक्का भांग पीकऽ बुत्त भेल छथि—ओ सोचय लागल। एकाएक ओकरा किछु हरलैक ने फुरलैक करिया कक्काकेँ पकड़ि कऽ झमारय लागल। कनेकाल तँ हुनकापर कोनो असरि नहि पड़लनि मुदा झकझोड़लापर जेना हुनक भक्क टुटलनि। ओ पहिने तँ अस्त-व्यस्त

भेल अपन देहपरक कपड़ा सम्हारलनि आ गुम्हरि उठलाह–'की हौ जीवछ, तोहूँ टाट पर बोर्ड लगयबा लेल गाम अयलह अछि की?'

'कक्का, अहूँ हद्द कऽ देलहुँ, फगुआ अयबामे एखन कैक दिन बांकी छैक आ अहाँ एखनेसँ बुत्त भेल छी। कने गामो घरकेँ देखबै की अपनेमे मस्त रहब।'–जीवछ करिया कक्काकेँ उपदेश दैत बाजल।

'हौ जीवछ, तोँ होशमे छह की नहि सैह पहिने कहि दैह तखन तँ हम तोरासँ गप करबह, ने तँ तोँ जा अपन घर आ हमरा अपन भजनमे रमल रहऽ दैह'–करिया कक्का आँखि नचबैत बाजि उठलाह।

'कक्का जँ हम होशमे नहि रहितहुँ तँ एते दूर कोना अबितहुँ, अहीँ जेना ने खाटपर पड़ल अर्र-दर्र बजैत रहितहुँ'-जीवछ लोहछैत बाजल।

'हौ जीवछ, जँ तोँ होशमे रहितह तँ बोर्ड लगा कऽ जे खेला भऽ रहल छै से नहि सुझाइ पड़ितह। जेँ सुझाइत नहि छह तेँ ने हम बुझैत छियह जे तोँ होशमे नहि छह।'

'कतऽ बोर्ड लागल छै जे हमरा नहि सुझाइत अछि?' जीवछ शान्त होइत कक्का सँ पुछलक।

करिया कक्का खाटपर सरिया कऽ बैसैत बजलाह-एखन तोरा भांग लागल छह तेँ सभ खेरहा हमरेसँ सुनि लैह। होशमे अयलापर बिसरियो जयबह तँ हमरा अफसोच नहि होयत।'

जीवछ अकछाइत करिया कक्काकेँ इशारेसँ कहलक जे कहू की कहबाक अछि आ करिया कक्का पूराक पूरा खेरहा सुनबऽ लेल शुरू भऽ गेलाह–

'अयँ हौ तोँ सभ मैथिली मैथिली करैत राति-दिन एक कयने रहैत छलऽ आ आब जखन तोरा सभक टाटपर सरकार बोर्ड लगा देलकह तँ सूति रहलह खाटपर! की करैत छह तोँ सभ जे हँसू, गाउ आ फगुआ खेआउ। कहऽ तँ पूरा मिथिलामे एक्कोटा फरफेश्वर साहेब छथुन जे लोकसेवा आयेगमे बैसऽवला परीक्षार्थीकेँ पढ़ा सकथुन। मानल अस्सी प्रतिशत ओ सभ दुधकट्टू जकाँ अखरकट्टू छथुन मुदा बीस प्रतिशत जे छथुन, हुनका किएक ने पलखति भेटैत छनि जे परीक्षार्थी सभ दरभंगा मधुबनी भाया पटना करैत दिल्ली आपस भऽ जाइत अछि.

अच्छा छोड़ऽ ई बात, आब चलऽ मैथिली अकादमीक दलानपर। ओहो वैह फगुआ गाबि रहल छह। दुनू टा भाषणमालामे अपन परामर्शीयेकेँ भाषणबाज बना देलकौह आ कहाँदन तेसरसँ सभटा पोथीक सम्पादन करा रहल अछि। विद्यार्थी सभ फिरीशान अछि, जे पोथियेसँ पढ़ि परीक्षा दऽ लेब। मुदा ओहूपर निदेशक ब्रह्मदंड देने छह जे पोथी छापत तऽ एक्के टा वैह प्रेस जे घपला करय, माछ पहुँचाबय, भने ओ टाका लऽ अग्रिम लऽ प्राप्ति रशीद नहि दिअय। कहाँदन ओकरे दर्जनो पोथी छपबाक भार दऽ अकादमीक कोषसँ टी.ए. लऽ निकलि जाइए अपन असली नोकरी पर निदेशक आ विद्यार्थी बगुला जकाँ प्रेससँ पोथी बहरयबाक आशामे ध्यान लगौनहि अछि। डेढ़ वर्ष बीत गेलैक मुदा एक्कोटा पोथी परामर्शी सभ तैयार नहि कऽ सकलह।

'छोड़ू कक्का ई सभ बात, गामक बात करू। बहुत दिनपर गाम आयल छी, किछु नव कहू।' जीवछ कक्काक ध्यान ओहि दिससँ बहटारबाक प्रयास कयलक।

'हौ जीवछ, तोहर निशांमे दमे नहि छह तेँ तुरत टूटय लगैत छह। हमर निशां देखह जे टुटतहि नहि अछि। कहाँदन नालन्दा विश्वविद्यालयमे मैथिलीक डिग्री कोर्स खूजना दू वर्ष बीति गेल मुदा ओकर नामांकन बहीमे खाता नहि खुजल अछि। ईहो सुनलहुँ जे पटना विश्वविद्यालयमे सभ संकायक विद्यार्थी एम. ए. मे नामांकन कराओत। सूनि कऽ करेज सूप सन भऽ गेल मुदा जखन हमर नेना सभ फार्म भरि काउंटरपर गेल तँ ओकरा दुर-दुरा देल गेलै, बैला देल गेलै। ओ सभ आश्वासन देनिहार, घोषणा कयनिहारक नामक बोर्ड लगाकऽ ओहिपर प्रतिदिन कारी रंग चढ़बैत अछि जे दोसर रंग नहि चढ़ि सकय।'

हौ, की कहियह, एही विश्वविद्यालयक एकटा नामी आ परनामी महान आदर्श शिक्षक एही सोगे गत दिन दुनिया छोड़ि स्वर्गमे आनन्द पयबा लेल चलि गेलाह आ ताही लाजे मासो बित गेलापर चेतना समिति सन शीर्ष संस्था शोक सभा मनयबा लेल अपनाकेँ तैयार नहि कऽ सकल। मुदा शोके ओ विक्षिप्त भेल लोहा-सीमेंट कीनैत रहल, छत ढ़लबैत रहल।'

हौ, की-की ने कयलौं जे हमर नेना सभ इर्ष्या-द्वेष, छोड़ि निरपेक्ष भेल जीवन यापन करबा लेल नीक-नीक पोथी पतरा पढ़य आ विद्वान बनय। मुदा जनैत छह काल्हि की भेल?....ननकूक बेटा कहलक जे बाबा 'कथा किसलयो' मे तँ तीन वंशक कथा अछि, कहू तँ आइसँ बतहू चालीसा पढ़ब प्रारंभ कऽ दी।'

–'कक्का ठीके अहाँके बेस लागल अछि भांग कखनो अकादमी तँ कखनो विश्वविद्यालय तँ कखनो कथा- किसलयमे वंशवादक बात कहैत छी, मुदा गामक नामपर ध्याने ने दैत छी। किछु गामोक तँ बात कहियौक-जीबछ फेर गामक बात उठौलक।

कक्का चिचिया कऽ बाजि उठलाह–'की कहियह गामक बात। पांच हजारक आबादीवला मिथिलाक एहि गाममे एकहु टा नेना मैथिली नहि पढ़ैत अछि आ ने ओकर माय-बाप ओकरा मैथिलीक नर्कमे ठेलिकऽ ओकर जीवन बरबाद करय चाहैत छैक। हौ, क्यो नहि चाहैत अछि जे ओकर बाल-बच्चा प्रोफेसर भइयो कऽ गंवार कहाइ, क्यो नहि चाहैत अछि जे यू. पी. एस. सी. आ बी.पी.एस.सी. क नामपर ओकर बाल बच्चा चकरघन्नी जकाँ नाचि कऽ थाकि जाय आ अन्ततः किरानीक नोकरीमे झोंका जाय। हौ जीवछ, कते कहियह हौ, आइ मैथिलीक कोंढ़सँ नोट दुगुन्ना-तिगुन्ना करयवला गिरोह तैयार भऽ गेल छह आ तें अपन-अपन टाटपर मैथिलीक बोर्ड लगौने छह आ निश्चित भऽ खाटपर पड़ल छह। जे फंसि गेल से गेल; जे फंसा लेलक से सेटिंग मेल आ बचलाहामे रेलम-पेल।

एतबा कहैत-कहैत करिया कक्का चितांगे खाट पर खसि पड़लाह आ हुनका मुँहसँ फेर वैह शब्द सभ लेबझाइत निकलऽ लागल–बोर्ड लागल टाटपर, मैथिल सूतल खाटपर, बोर्ड......लागल.... मैथिल....खाटपर।

जीबछ बूझि गेल जे करिया कक्कापर भांग अपन पूरा-कब्जा जमा लेलक अछि। ओ हुनका दिस एक बेर अनमनस्क भावें तकलक आ अपन घर दिस विदा भऽ गेल।

◆

(समय-साल, फरवरी-2007)

समाजवादी–दर्शन

साओन मासक दर्शन होइते इन्द्र भगवान नाचि उठलाह। चतुर्दिक वर्षा होमय लागल। चौबीसो घंटा नहि भेल छल कि हाहाकार मचि गेल। कारण, सभतरि पानि पैसि गेल छल। घर, कार्यालय, स्कूल-कालेज, एते धरि जे रेलक पटरी आ हवाइ जहाजक रनवे सेहो डूबकुनियाँ देबऽ लागल। बुझनुक लोक निश्चिंत छल जे ई सभ इन्द्र भगवानक लीला छनि। जाहि विधि रखताह ताही विधि जीवन खेपब। मुदा किछु झक्खी लोक, जे सभ कथुक लेल सरकारेकें दोषी मानैत अछि उठि बैसल आ लागल चिकरय। क्यो बाजय-ई सरकारक निकम्मापन नहि तँ की अछि? जलनिकासीक कोनो व्यवस्था नहि।' 'क्यो बाजय'–ई स्थिति कहियो नहि देखल? जे ने होअय एहि भ्रष्टाचारी राजमे। सभ एकरे सभक किरदानी छैक।' एक गोटे फनैत बाजल–जे सरकार बरखाक पानिकें कात-करौट नहि लगा सकैत अछि से भ्रष्टाचारकें कोना दूर करत।' दोसर दहला मारलक-एह, एहि पानियेसँ भऽ गेलैक उगाहीक ओरिआओन, देखैत ने चलू आगाँ की-की होइत अछि।'

एक गोटे जे बड़े तन्मयतासँ ई सभ सुनि रहल छलाह सहजतासँ बाजि उठलाह–यौ जी, अहाँ सभ पानि पानिक हल्ला मचौने छी। बरसातमे पानि नहि होयतैक तँ की वर्फ खसतैक। चिन्ता एहि पानिसँ बेसी सड़क सभक करू जे पानि हटिते बिला जायत।'

एवंक्रमे बरसातक पानिसँ प्रारंभ भेल ई घमर्थन भ्रष्टाचार आ सड़कपर आबि पहुँचल छल। रच्छ एतबे छल जे पुनः जोरगर बरखा आबि गेल आ पानिमे झिलहरि खेलाइत बाबू-भैया सभ माथ नुकयबा लेल लगले जेम्हरे जोगार देखलनि तेम्हरे ससरि गेलाह। मुदा छोड़ि गेलाह एकटा प्रश्न जे आखिर ई सड़क सभ एक्के बरखामे अपन गिट्टी, अलकतरा गमा कऽ अपन हाड़-हाड़ किए उगा लैत अछि?

घुमैत-घुमैत ई प्रश्न करिया कक्काक दलानपर सेहो पहुँचि गेलनि। प्रश्न सुनिते ओ भभाकऽ हँसलाह। मोने-मोन बजलाह-मति

मारल छैक सभक जे एहन-एहन छोटछिन बातपर ध्यान देल करैत अछि। जे सकमे छैक से करिते ने अछि आ अनेरे माथ धुनैत अछि। फेर ओ सोचलनि, इन्द्र भगवानक आगाँ हमरा सभक की मजाल? जतबे सम्हरय ततबे सँ संतोष करी, एहीमे कल्याण।' फेर ओ मुस्कुरयलाह आ गोठुल्लामे राखल कोदारि उठा दलानसँ नीचा उतरलाह जतऽ पानि जमा भऽ गेल छलनि। धीरे-धीरे ओ नाली जकाँ बनबैत पानिकेँ खत्ता दिस साहय लगलाह। अन्तिम छह मारिते पानि खत्तामे तेजीसँ जाय लागल। एकठाम कने पानि ठमकल तँ ओकरा ओ गओंसँ साफ कयलनि। डॉड़ सोझ करिते छलाह कि नजरि पड़लनि कबईक पतियानी पर जे ऊपर दिस चढ़य लागल छल। ओ मोने-मोन इन्द्र भगवानकेँ धन्यवाद दैते छलाह कि हरिया ओहिठाम जुमैत टोकि देलकनि-की कक्का बरखोमे आराम करब से नहि होइए जे कोदारि लऽ कऽ एतऽ ठाढ़ छी।'

करिया कक्का ओकरा हाथक इशारासँ चुप होयबाक संकेत दैत दलानपर बैसय लेल कहलथिन। ओ कनेक काल ओतहि ठाढ़ रहि दलानपर जा बैसल। करिया कक्का लगले दलानपर आबि बैसलाह। हरिया, जे कक्कासँ बतकुट्टनि करबा लेल अगुतायल छल, चट दऽ कहि बैसलनि-'कक्का अखबार पढ़लहुँ की नहि? बरखासँ पूरा राजधानी डूबि गेल अछि आ एही कारणे सरकार सेहो संकटमे फंसि गेल अछि।'

करिया कक्का गंभीर होइत बजलाह-कहू तँ भला, ईहो कोनो बात भेलैक। इन्द्र भगवान बरखा दैत छथिन ताहि लेल सरकार कोना दोषी भेल? की आब ओ सरकारसँ पूछि कऽ राशन जकाँ बरखाक पानि देथिन। एही सभ कारणे ओ कहियो काल वेदना जाइत छथि आ बरखा बन्न कऽ दैत छथि तँ सभ कहैत छहक जे अकाल भऽ गेलै।'

'हम ई कहाँ कहैत छी कक्का जे ओ बरखा बन्न कऽ देथुन। हम तँ ई कहैत छी जे सरकार बरखाक पानिकेँ शहरसँ निकालबामे अक्षम भऽ गेल अछि। नाला व्यवस्था ध्वस्त भऽ गेल छैक आ ओकर अधिकारी-कर्मचारी हाथपर हाथ धऽ बैसल तमाशा देखि रहल छैक-हरिया कक्काकेँ स्थिति बुझयबाक चेष्टा कयलक।

कक्का आर तमकैत बजलाह-बुझलियह, बुझलियह। एहिमे सरकारक कोन दोष! हौ, हम पुछैत छियह जे सरकार तोरा घर लग नाला

बनाबह, सड़क बना दैत छह आ तों सभ ओहिठाम घरक कूड़ा-कर्कट फेकि ओकरा भरि दहक। सड़कक दुनू कात ऊँच कऽ सड़कोकेँ नाला बना दहक तँ ओकर कोन कसूर। तोँ सभ मीलिकऽ पानिक रास्ता छेकि लैह तँ सरकारक कोन अपराध हौ, अनकर घरमे की पकैत छैक, के अबैत जाइत छैक ताहि लेल मुड़ियारी देने फिरबह मुदा नाला जाम भऽ गेलै कि सड़क नरक बनि गेलै से देखबहक से पलखति नहि रहतह तँ भोगह। तों पानिकेँ नालामे नहि जाय देबहक तँ ओ घरे-आंगनमे ने घुसतह। रस्ते-पयरेने छेकतह। ओ तोरा सभ जकाँ तँ नहि ने छैक जे सरकारेक बनल सड़कपर चलबा लेल अपन जन्मसिद्ध अधिकार बूझत। ओ तँ इन्द्र राजाक इशारा पर अबैत अछि आ 'जहाँ चाह तहाँ राह' क तर्जपर चलैत अछि। तोँ ओकरा लग अयबासँ रोकि लेबहक की?'

-कक्का अहाँ तँ एकदिसाहे सरकारक पक्ष लऽ रहल छिऐक। कने समाज दिस ठाढ़ भऽ देखियौक तखन बुझबामे आओत जे लोक केहन विपत्तिमे पड़ल अछि।' हरिया फेर कक्काकेँ रस्तापर अनबाक कोशिश करय लागल। मुदा कक्का धऽ लेलथिन-हौ, समाजमें के छोट, के पैघ से सरकार लग नहि चलैत छैक। सभ सरकार सेहो समाजवादिये नीतिपर चलैत छैक। नहि विश्वास छह तँ देखि आबह अपने आँखिये। राबड़ीक घर चुबैत छनि, छोटे साहेब (पूर्व मुख्यमंत्री) पलंगकेँ नाव बना घरेमे झिलहरि खेला रहल छथि। मुख्य न्यायमूर्तिकेँ 'माई लार्ड, माई लार्ड' कहैत-कहैत वर्षाजल हुनकासँ फरियाद करय हुनको घरमे प्रवेश कऽ गेलनि, तखन जँ सामान्य जनक थारी-लोटा पानिमे बुलैत छैक तँ किएक आपत्ति भऽ रहल छह। मानि लैह जे एही सभ क्षणमे असली समाजवादक दर्शन होइत छैक। तेँ हम कहबह जे भोगि लैह ई आनन्दक समय। उठह आ चलह हमरा संग कबइक शिकारमे, जे एहि क्षणकेँ स्मरणीय बना देअय।

ई कहैत करिया कक्का एक हाथमे डोल ओ दोसर हाथमे मुंगरी उठा विदा भऽ गेलाह ओहिठाम जतऽ कनेकाल पहिने पानि जमकल छल, जे शेष भऽ गोटेक पसेरी कबइकेँ उठापटक करैत छोड़ि गेल छल। अकासमे ओहिना इन्द्र भगवान नाचि रहल छलाह आ कबइपर मुंगरी चमकबैत करिया कक्का नाचि रहल छलाह। ♦

(समय-साल, अगस्त-2006)

बुचकट

बुचकट शब्द मैथिलीक ठेठ शब्द अछि प्रायः। ई शब्द आभास करबैत अछि जे मैथिलीक अंग्रेजीआइन कोटिक अछि तथापि ई कहऽ आ सुनयमे नीक लगैत अछि। ओना हमरा जनैत तथाकथित 75 सँ 80 प्रतिशत मैथिल आब एकरा बिसरि गेल होयताह। मुदा प्रसन्नता एहि बातक अछि जे भने ओ एहि शब्दकेँ बिसरि गेल होथि, बिसरि जयबाक प्रयास करैत होथि, ओकर अर्थ की होइत छैक से देखयबाक लेल जोरगर प्रयत्न कऽ रहल छथि, खास कऽ युवती लोकनि तँ 'बुचकट' केँ अपनयबा लेल आफन तोड़ने छथि।

हमरा स्मरण अछि जे एक बेर एकटा बुशशर्ट बाबूजी हमरा लेल अनने रहथि तँ ओ ओहिना राखल रहि गेल, कहियो हम देह नहि लगौलहुँ। कतबो क्यो कहलक, ओ बुचकट हमरा आकर्षित नहि कयलक। मुदा आब तँ ओकर ठीक उनटा हमरा अपने घरमे देखबामे अबैत अछि। कैक टा शर्ट-पैन्ट, फ्राक इत्यादि जे हम बड़ सखसँ कीनि कऽ देस-परदेससँ धीया-पूता लेल अनलहुँ बुचकट नहि होयबाक कारणे घरमे एमहरसँ ओमहर फेकल चलैत अछि, क्यो देखनिहार नहि। कहलक हमर बेटा-'की पापा अहूँ ई झोल-झक्कर उठा अनैत छी, देहपर मसहरी जकाँ टांगल ई सभ लगतैक।''

किछु दिन बाद देखलहुँ जे जे फ्राक हम अपन आठ वर्षीया बेटी लेल बड़ सखसँ अनने रही से सोझांवालीक एम.ए.मे पढ़निहार युवती पहिरने छलि आ एकटा विजेताक नजरिसँ देखैत हमरा आगाँसँ सर्रसँ निकलि गेलि छलि। आफिससँ आपस साँझमे अयलहुँ तँ पता लागल जे ओ बुचकट कमाल कऽ देने छल आ दरभंगा हाउसमे बड़का बबाल भऽ गेल छलैक। कहाँदन ओ युवती ओतऽ निहुरि कऽ किछु कऽ रहलि छलि। ओकर बुचकट आ नीचावला जिन्समे पाछां दिस एकटा फांक जकाँ भऽ गेल छलैक। से एकटा युवककेँ देखैत जखन सह्य

नहि भेलैक तँ ओ नहुयें सँ गेल आ ओहि बुचकट-जिन्सक दूरीकेँ समाप्त करबा लेल ओहि बीचमे जरैत सिगरेट धऽ ओतऽसँ पड़ा गेल।

पता नहि ओकरा ओहिसँ की लाभ भेलैक मुदा हमरा लागल जे ओकरो हमरे जकाँ बुचकट नीक नहि लगैत होयतैक तेँ ओ एतेक हिम्मत कऽ गेल।

आगाँ की भेल होयतैक से जनबाक इच्छा हमरा नहि भेल आ होयबो ने करत। कारण ई बुचकट रूप खास कऽ महिलालोकनिकेँ तेना ने गसिया कऽ धऽ लेने छनि जे कमसँ कम एहि शताब्दीमे अपनाकेँ आर बुचकट बनौने जायत। हम प्रसन्न छी जे बुचकट शब्द भने मरि जाय, हमरा सभक बीच ओकर रूप आर भकरार भऽ कऽ सोझां आबि रहल अछि। 'बुचकट' बाजब नहि, घर-बाहर देखैत तँ रहब। मैथिली-मैथिलक यैह रूप सँ हमरा सभकेँ जियौने रहत। यैह की कम अछि।

(समय-साल, जनवरी, 2010)

◆

तावत काल

कोलकातासँ दैनिक 'मैथिल समाद'क प्रकाशित होयबाक सूचना भेटल तँ मोन गद्गद् भऽ गेल जे चलू एकटा कलंक छल जे दैनिक नहि अछि से आब धोआ जायत मुदा जखने ओकर प्रवेशांक भेटल तँ ओकरा देखितहि लंक लऽ पड़यबाक मोन होअय लागल। कोसीक महाप्रलयसँ आर्त्तनाद करैत मिथिलाक ई समदिया शुभकामना-पत्रक रूपमे आबि ई बुझा देलक जे ईहो तीन तिरहुतिया तेरह पाकसँ भिन्न नहि अछि। एकटा गुटक मोसाहेब सभ अपन लटकेना पकड़ने, अपन समाद नेने ओहिमे झिलहरि खेलाइत देखाइत पड़लाह आ कोसी प्रलयक दृश्य आदि-आदि जकाँ अन्तिम पन्नापर कोनहुना लसकि-फसकि बाढ़ि-पीड़ित सन रेलगाड़ीपर लटकल पड़ाइत। कहने रहथि एकटा मित्र जे ओकर उद्घाटन बंगालक मुख्यमंत्री करताह मुदा जखन ओकर प्रवेशांकक विमोचन भेल तँ ओतऽ मुख्यमंत्रीक के कहय एकटा विधायको नहि छलाह। ई तँ बादमे पता चलल जे ई जय श्री रामक पाटीक अखबार अछि जे सभ दिन मुखमे राम बगलमे छुरी राखि राजनीति करैत रहल। लेकिन ई सभ तँ चलिते रहैत छैक, चलिते रहतैक, चलू एकटा कीर्तिमान बनि गेल दैनिक निकलबाक। भने ओ पटनो धरिक सफर दैनिक नहि कऽ सकैत होअय। प्रवेशांकमे छपलाहा फोटोवला बाबूसाहेब सभ ओकरा अवस्से पत्रकारिताक इतिहास लिखबा लेल पजिया कऽ रखताह सैह की कम अछि!

कहाँदन पटनाक भंगिमा नाट्य संस्था अपन पत्रिकाक प्रकाशनमे बाधाकेँ देखैत एकटा प्रयोग कयलक जे जकरा लग मोबाइल आ मोटरसाइकिल रहतै सैह ओकर सम्पादक बनत। ई प्रयोग सफल भेलै आ पत्रिका एखनधरि दनादन दौड़ि रहल छै। एहने सन प्रयोग साहित्य अकादमी सेहो कयलक जे जकरा होटल रहतैक सेहो परामर्शदातृ समितिक सदस्य बनि सकैत छथि। किछु गोटे आपत्ति करैत खुसुर-फुसुर

कयने रहथि जे एक्के महाविद्यालयक एके विभागक दू सदस्य किएक? आब ओ सभ चुप छथि, कारण हुनका प्रयोगक विषयमे तखन नहि बुझल छलनि आ तेँ कातो भऽ गेल छलाह। मुदा आब ओ सभ चमत्कृत छथि प्रयोगकेँ देखि। ओही होटलमे सभा-सोसाइटी होइत अछि, ओहीमे सम्मान आ ओहीमे बनल मेवा-मिष्टानक कचरमकूट सेहो संगहि समितिक सदस्यक पिताक जूरी बनबाक जोगार सेहो।

कहाँदन एक बेर एकटा वायसराय भोजपुरक एकटा राजा ओतऽ बिनु नोते पहुँचि गेलाह आ कहलथिन जे हम अहाँ ओतऽ पहुँनाइ करय अयलहुँ अछि, देखी अहाँ की सभ करैत छी। राजो पहुँचल रहथि। भनक लागि गेल रहनि जे वायसराय कोनो लाथे पहुँचबे करताह। ओ पहिनहिसँ खानसामाकेँ छप्पन प्रकारक विन्यासक आदेश चुपेचाप दऽ देने रहथिन। से जखन वायसराय पहुँचलाह तँ जमि कऽ भोजभात भेल। राजा पुछलथिन–'सरकार खूब कचरम-कूट भइल नू।' वायसराय प्रसन्नचित तँ रहथि मुदा 'कचरम कूट'क अर्थ नहि लगलनि। सैह परि भेल दरभंगामे सम्पन्न हरिमोहन झा शतवार्षिकी समारोहमे-खूब कचरम कूट भेल। मातामह पक्ष आ पितामह पक्षक पीढ़ी दर पीढ़ीक तँ संगम भेवे कयल जे मगहसँ बिनु नोतल एकटा महामहिम सेहो खूब कचरम कूट कयलनि। आ ई सभ संभव भेल होटल मालिककेँ साहित्य अकादेमीक सदस्य बनयबाक प्रयोगसँ। कते नीक होइत जे पटनाक कोनो होटलक मैथिल मालिक सेहो साहित्य अकादेमीक सदस्य रहितथि आ पटनोमे खूब कचरम कूट होइत। लेखक संघकेँ सम्मानक टाटक नहि करय पड़ितैक, होटलेक महिमा मानि लेल जाइत।

आ जहाँ धरि महिमाक प्रश्न अछि तँ चेतना समितिक आलोचना सभ करैत अछि ओकर महिमाक बखान क्यो नहि करैत अछि। मन्त्रेश्वर झा लगभग 40 वर्षसँ मैथिलीक सेवा कऽ रहल छथि, कतेको संस्थाकेँ साहि कऽ जगजियार करा देलनि मुदा हुनक सेवाक मेवा हुनका क्यो नहि देलकनि। कतेक डारि पर गेलाह ओ। कहियो कविता, कहियो नाटक आ कहियो व्यंय तँ कहियो कथा मुदा जखने प्रशासनक बात करैत संस्मरण सुनबऽ लगलाह तँ समिति हुनक एकबाल मानि लेलकनि आ अपन महिमा देखबैत 'यात्री चेतना पुरस्कार' सँ सम्मानित कऽ

देलक। ओ बुझि गेल जे कोनो सेवकके संस्थे चिन्हि सकैत छैक पं. गोविन्द झा, चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' सन-सन वटवृक्ष नहि जे अपने विस्तारमे आजन्म आकंठ डुबल रहि जाइछ । आन दमगर वृक्ष नहि देखाइत छैक जे लोकके ओकरे जकाँ छाहरि प्रदान करैत छैक।

आब आउ छाहरि प्रदान करबाक बातपर तँ ईहो जानि लियऽ जे मन्त्रेश्वर झाजीक छाहरिमे मैथिली लेखक संघ पनपल–मुदा की कहल जाय! नओ मासमे एकटा विवाहितासँ घरक लोकके अपेक्षा होमऽ लगैत छैक जे नेनाक किलकारीसँ घरमे एकटा सुखद अनुगूंज होमऽ लागत। मुदा आहि रे बा, ई की भऽ गेल। मास-पर-मास बीति गेल, वर्षो लागि गेल तँ खाली अभिनन्दन-वन्दन, ने कोनो स्पन्दन आ ने कोनो गर्जन। मात्र कलहंत जकाँ अभावक अरण्य रोदन।

मुदा एखन हमर एकटा विनम्र निवेदन जे हम सभ ने रोदन करी आ ने वंदन। कोसी माइक छिड़िअयलासँ जे हमर भाइ-बहिन, माय-काकी, बाबा-कका, धीया-पूता जे छहोछित्त भेल हाक्रोश कऽ रहलाह अछि तनिक पुनर्वास लेल, तनिक सहायता लेल ओहिना संघर्ष करी जेना अन्हार घुप्पमे, अन्हर-बिहाड़ि आ तेज वर्षासँ एकटा माय अपन नेनाकेँ बचबैत बिजलौकाक प्रकाशमे एकटा आश्रय दिस पयर बढेबा लेल संघर्ष करैत बढ़ैत अछि। तावत काल लेल तीन तिरहुतिया तेरह पाकवला प्रवृति, कचरम-कूटवला आवृति, अभिनन्दन-वन्दन आ कलहंत जकाँ अरण्य रोदनक परिपाटी एकटा नीक नाटकक एकटा 'क्लाइमेक्स सीन जकाँ स्थिर (फ्रीज)।

◆

(समय-साल, अक्टूबर, 2008)

धन देहि......

पावनिक आरंभ दुर्गापूजासँ भऽ रहल अछि जे क्रमशः कोजगरा, धनतेरस, दीयाबाती, भातृद्वितीया, चित्रगुप्तपूजा, छठि होइत कार्तिक पूर्णिमा दिन सामाचकेबाक भसाओनसँ विराम लेत। एही बीच ईद सेहो अपन पवित्रताक प्रसाद बाँटि निश्चिन्त भेल अछि। पावनि-तिहारक मौसम सभ वर्गमे एक दिस जँ अति उत्साहक संचार कऽ रहल अछि तँ दोसर दिस एहि पवित्र अनुष्ठानक खर्च जुटयबा लेल अपवित्र तरीका अथवा हथकंडा अपनयबा लेल लोकके सेहो विवश कऽ रहल अछि।

ई सर्वविदित अछि जे एहि पवित्र अनुष्ठान-यात्रामे सभ क्यो अपन औकातसँ बेसी खर्च कऽ पुण्यक भागी बनय चाहैत अछि। मुदा जनैत छी, एहि लेल की-की सभ करय पड़ैत अछि! मैया दुर्गाकेँ चाहियनि मेवा-मिष्टान आ बलिप्रदान, माँ कालीकेँ चाहियनि चुनरी चढ़ौना आ बलिदान, गणेश-लक्ष्मीकेँ चाहियनि खीर-पूड़ी, लड्डू आ पकवान आ छठि मइया प्रसन्न होइत छथि अर्घ्यदानसँ। मुदा की कहू ई देवी-देवता हमरा सभसँ जेना-तेना पूजा-पाठ, व्रत-उपास अपना नामपर करा तँ लैत छथि मुदा, नोटपर बैसल गांधी बाबाक खेरहा 'सबको सन्मति दे भगवान' केँ पूरा नहि करैत छथि।

देखि लिअऽ पूजाक नामपर भऽ रहल ई दृश्य सभ-टोलीमे युवा रत्न सभ देवी अनुष्ठानक नामपर चंदा मांगि रहल अछि। शाही फरमान जकाँ घरे-घर रशीद पहुँचा रहल अछि। जे मनमाना देलथिन तनिका दुर्गा-कालीक ई भक्त बकसि देलथिन आ जे नहि देलथिन तनिकर बहु-बेटीक चेन छिना जयतनि पूजा पंडालमे, पाकेटमारी भऽ जयतनि। आ से जँ नहि भऽ सकलनि तँ छागर-पाठी जकाँ ओ एहि अनुष्ठानक भेंट चढ़ि जयताह। आखिर दुर्गा-कालीक रौद्र रूप तँ हिनके सभमे ने विराजमान छनि। मदिरा-पानक बाधक तत्वकेँ एहि अनुष्ठानमे होम होयबेक चाही ने, आखिर कोना देवी दुर्गा प्रसन्न होयतीह।

हे देखू, आइ–काल्हि सभ चौक–चौराहापर वाहन चेकिंग चलि रहल अछि। सभ दिन टेम्पो–बस, मोटरसाइकिलपर ओवरलोडिंग होइछ मुदा चेकिंग कहियो नहि। जेँ कि ई पावनिक मौसम छैक तेँ ई चेकिंग। आखिर हमर एहि अधिकारी आ हुनक पलटनकेँ नवरात्रा करबाक छनि, फलाहारीक व्यवस्था करबाक छनि, घरक सदस्य सभकेँ कपड़ा–लत्ता आ त्योहारी जे देबाक छनि तेँ भऽ जाय सघन चेकिंग। किछु सरकारोकेँ एहि नाम पर भेटि जाउक आ अपन दरकार लेल तँ चाहबे करी।

ई तँ पूजाक मौसमी चेकिंगक बानगी छल जे सड़के टा पर नहि रेलोमे छपाछप पड़ि रहल अछि आ दुर्गापूजा सहित अबैया आन पावनिक खर्चाक जोगार जोरगर रूपेँ चलि रहल अछि।

मुदा ई सभ तँ देवी-देवताक आगाँ–पाछाँ लागल भीड़मे रहयवला भक्त छथि। हिनकर असली भक्त जे कामरु कामाख्या अथवा विंध्याचलक जयबाक उठौना कयने छथि तिनकर ने पुण्य मार्गपर जयबाक तैयारी देखू! ई लोकनि बेसी हरहर–खटखट अथवा चंदा चुटकीमे विश्वास नहि करैत छथि। सोझे–सोझे तेहन हाथ मारैत छथि जे दुर्गा मैयापर चुनरी की पाठा-पाठीक बलिप्रदानक धर्रोहि लागि रहल अछि। आब अहाँ कहब जे एकर सभक जोगार कहाँसँ भेल? की अहाँ अखबार नहि पढ़ैत छी, टी. वी. नहि देखैत छी! जहियेसँ पावनि-तिहारक आगमनक सिहकी उठल अछि असली दुर्गाभक्त बैंकसँ निकलैत नगदधारी सभकेँ दबोचि क्षणेमे लखपति बनि जाइत छथि। ई कोनो एके–दू टा भक्त छथि से नहि प्रत्येक शहरमे एहन भक्तलोकनि देवी-देवताकेँ प्रसन्न करबा लेल एहन अनुष्ठान कऽ रहल छथि आ पुलिस हुनका तकबा लेल एमहर–ओमहर हथोरिया दैत रहि जाइत अछि। जँ एहन भक्तपर पुलिस हाथ देबाक प्रयत्नो करैत अछि तँ हुनको फूल-फल-धूपकाठीक ओरिआओन करबा लेल किछु दक्षिणा दऽ ई लोकनि एकान्त पूजा लेल प्रस्थान कऽ जाइत छथि।

अहाँ कहब जे हम समाजक किछु विशेष भक्त टाक वर्णन कऽ ससरि जाय चाहैत छी तँ से बात गलत होयत। अहूँ जनैत छी जे एहि मौसममे खुदरा पैसा सभ ट्रैफिक पुलिसक घरमे चल जाइत छैक आ आपस करबामे सय टाका दऽ अस्सी लेल जाइत अछि। अहाँकेँ नहि

विश्वास होअय तँ मीठापुर (पटना) क कोनो तरकारीवला, ठेलावला अथवा रिक्शावलासँ एहि मादे जिज्ञासा कऽ सकैत छी जे स्वयं एहि मौसममे एकक दू लेबामे विश्वास करैत अछि। आफिसक किरानी बाबू आ बड़ा बाबूक बात छोड़ू, कारण जँ ई लोकनि तरघुसकी वला काज छोड़ि देथि तँ निगरानी विभाग बंदे भऽ जायत। मुदा अहीं कहू जे ई उचित अछि जे निगरानी छापा बारह बजे दिनमे मारय आ ओहिसँ पहिने साढ़े एगारहे बजे छापामारीक बरामदगीक रिपोर्ट बना लिअय! मुदा की करबै, ई सभ देवी-देवताक कृपे ने छनि जे एकटा इनकम टैक्स इन्सपेक्टर करोड़पति जकाँ शानसँ रहय, एकटा दारोगा चारि-पांच टा गाड़ीक धूआं उड़ाबय, बिहारक अधिकांश आफिसर शक्ति उपासक रहबाक कारणे आधासँ बेसी पटनाक जमीनक मालिकाना नारी शक्तिमे निहित कऽ दिअय।

हम तँ कहब छोड़ू ई सभ खेरहा आ चलू हमहूँ-अहाँ एहि मौसममे देवी देवताकेँ 'धनं देहि' संग आर जे किछु होइत हो से कहैत गोहराबी आ धनक आवाहन लेल बिना कोनो लाज-लेहाजक जे संभव भऽ सकय से करी।

◆

(समय-साल, अक्टूबर, 2008)

गोलैसी–'अर्थात'

'गोलैसी' मैथिलीक अपन शब्द अछि आ तेँ आन भाषाक शब्दकोषमे स्थान पयबा लेल कछमछा रहल अछि। कारण, आचार्य गोविन्द बाबूक दुनू शब्दकोषमे ओ अपन अर्थसँ असंतुष्ट अछि। हुनक शब्दकोषमे ओ गुटबाजी धरि सीमित अछि। पं. मतिनाथ मिश्र 'मतंग' एहि शब्दक संग किछु न्याय कयलनि अछि अपन मैथिली शब्द कल्पद्रुममे। ओ गोलैसीक अर्थ दलबन्दी बतबैत छथि आ संगहि एकर व्याख्या करैत कहैत छथि–दोसरापर आक्षेपक संग अपन मतानुयायीक संग्रह। ई अर्थ गोलैसीकेँ कने व्यापकता प्रदान करैत अछि आ तेँ ई शब्द आन शब्दकोषमे नहि जा पबैत अछि आ मैथिली आ मैथिलक बीच अपन प्रभाव देखा रहल अछि।

एक दिस गोलैसी नामक एहि शब्दक विडंबना ई छैक जे एकर व्याख्या फरिछा कऽ नहि भऽ पाबि रहल छैक तँ दोसर दिस एकर भाग्य तेहन जोरगर छैक जे आइ सभठाम ई अपन एकबाल कायम कयने अछि। ठीक ओहिना जेना मैथिली आलोचना आ मैथिलीक आलोचकक संग भऽ रहल छनि अर्थात विशुद्ध आलोचनाक पोथीक नामोनिशान नहि मुदा आलोचकक रूपमे समादृत महापुरुषलोकनि। दुर्भाग्य मैथिली भाषीक जे एकहु टा शब्दकोष निर्माता एहि दुनू शब्दक परिभाषा नहि फरिछा रहलाह अछि आ 'गोलैसी' आ 'आलोचक' दुनूकेँ बीच मझधारमे छोड़ि देलथिन अछि।

ओना शाब्दिक अर्थकेँ छोड़ि जँ ठेँठ अर्थ भजिआओल जाय तँ 'गोलैसी ओहि नीतिकेँ कहल जाइछ जाहिमे एकटा व्यक्ति वा गुट दोसर व्यक्ति, गुट, समूह वा व्यक्तिक निन्दा करैत अपन गुट अथवा अपन स्वार्थ पूर्त्ति लेल निर्लज्ज भऽ ओहि व्यक्ति अथवा समाजक अहित करबामे आनन्दक अनुभव करय।

एहि व्याख्याकेँ जँ मानी तँ की मैथिलीक वर्तमान आलोचना विधा अथवा तथाकथित आलोचक लोकनिक कृत्य गोलैसीसँ कन्हामे

कन्हा मिलबैत चलैत नहि देखल जाइछ? गोलैसी अर्थात निन्दा मिश्रित, स्वार्थपूरित ई नीति की कऽ रहल अछि ताहिसँ जीवकान्तजी अत्यन्त दुःखी भऽ लिखैत छथि–''नीक कथा पहिनहु कम लिखल जाइत छल। आब तँ आर दुर्गति देखैत छी। प्रबोध सम्मान आ अकादेमी पुरस्कार, एन.बी.टीसँ मैथिली प्रकाशन, साहित्य अकादेमीक टीए. डीए. हमरा सभकेँ प्रतिभाहीन कयने जाइए।''

आदरणीय जीवकान्तजी हतोत्साहित छथि मुदा हम नाभरोस नहि छी। जँ गोलैसीक कनिको अर्थ बुझलिऐक अछि तँ चोरिक पूजाक फूलसँ मैथिली मंदिरकेँ अपमानित नहिये होअय देबैक। मातबरक सोङ्गरसँ नामवर बनबाक जे प्रतिमान बनल अछि तकरा गोलैसीक आखाढ़ापरसँ उतारि जावत ओकर मान्य परिभाषा नहि बनतैक तावत आलोचकक प्रमाण-पत्र कोना दऽ देबैक? मैथिलीमे गोलैसी आ आलोचक दुनूक परिभाषाक तँ पहिने निपटान होअय।

मानल रमानाथ बाबू नामवर छलाह मुदा की दिनेश कुमार झाक मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास, सुधांशु शेखर चौधरीक संदर्भ, देवशंकर नवीनक आधुनिक मैथिली साहित्यक परिदृश्य, डॉ. जयधारी सिंहक समालोचना शास्त्र, कुलानन्द मिश्र, डॉ० रामदेव झा, रामानुग्रह झा, ललितेश मिश्र, राजमोहन झा, सहित अनेक समर्थ व्यक्तिक समालोचनात्मक योगदान तूरक ढ़ेर छल जे अनवरत एकलपाठ कयनिहारक भारसँ दबा गेल? चर्चो धरि नहि। जाहि आलोचनाक पोथीकेँ लोकोक्तिक बैसाखी नहि चला सकल, जाहि आलोचनाकेँ अखियासल, बेसाहल, भजारल नहि भजा सकल तकरा गोलैसीक प्रतिमाने टा मानल जा सकैछ ने! कारण, एहूमे दुनू शब्दकोषक शब्दक शाब्दिके अर्थ टा झलकैत अछि आलोचना-समालोचनाक विन्दु-विमर्श नहि।

एहि गोलैसी अर्थात समालोचनाक परिभाषा नहि बनने की हानि भऽ रहल अछि से हम सभ नहि देखि रहल छी आ सयसँ एक सय दस पृष्ठक पोथी लिखि टाल लगयबा लेल बेहाल भऽ रहल छी। हुंड-अबंड आ मथछिप्पू साहित्यकार कहयबा लेल मंच तकने फिरैत अछि, गोष्ठी-सेमिनारक नामपर गुटबन्दी-दलबंदीक युगलबंदी भऽ रहल अछि। क्यो साहित्य अकादमी दफानि लेने छी तँ क्यो भारतीय

भाषा संस्थानकेँ खूटमे बान्हि घूमि रहल छी। क्यो हवाइ जहाजसँ उड़ैत छी तँ क्यो टैक्सी भाड़ा आ ए. सी. क्लासक भाड़ा लेल छछनैत छी, मुदा किनको ऊहि नहि अछि जे रमानाथ बाबूक सामर्थ्य, मधुपजीक साहित्य-सौंदर्य आ किरणजीक तपस्वीक रूपकेँ वरण कऽ सकी।

नित-नवीन बनि रहल प्रतिमानकेँ युवावर्ग देखि रहल अछि। श्री आ पंडितक फकड़ाकेँ सेहो अकानल जा रहल अछि आ गोलैसीक चलि रहल मारिसँ तोप बनल तथाकथित, आलोचक लोकनि स्वत: ओहिना श्रीहीन भेल जा रहल छथि जेना पटना संग्रहालयमे पड़ल तोप सभ श्रीहीन भेल पड़ल अछि। मुदा ओ तँ लोहक अछि तेँ जीवित रहत। श्री-पंडित लोकनि की गोलैसियेक बलपर जीवैत रहबाक सख पोसने छथि?

हम प्रसन्न छी 'अर्थात' गदगद् छी जे आबयवला समयमे गोलैसी हमरे संग देत। कारण हम ओकर पूर्ण व्याख्या कयलिऐक अछि, ओकर महत्ता बुझलिऐक अछि, ओकर सटीक व्याख्या करयबाक आग्रह सेहो कयलिऐक अछि, तेँ चाहे तँ भारतीय भाषा संस्थान एहि काज लेल आर्थिक सहयोग देत आ जँ ओ सहयोग नहि देत तँ हमर एहि अनुसंधान पर साहित्य अकादेमी तँ अवश्ये पुरस्कृत करत।

◆

(समय-साल, दिसंबर, 2006)

सीडी समीक्षा

डाकबंगलाक पेट्रोल पंपपर मधुकान्त जी प्रणव दादा जकाँ गाल फुलौने पेट्रोल भरबा लेल पाइपक मुट्ठीकेँ पेस्तौल जकाँ धयने गाहकक प्रतीक्षामे बड़ देरसँ ठाढ़ छलाह मुदा फगुआक उमकीक कारणे क्यो टघरिये ने रहल छल। कखनो ओ अपनापर तमसाथि जे किए ओ प्रणव दादासँ घुट्ठी सोहाग कयने छथि जे फगुओ दिन नवका रेटवला पेट्रोल लेबऽ क्यो नहि आबि रहल अछि तँ कखनो नीतीशपर तमसाथि जे किए ओ एतेक दारूक प्रचलन बढ़ा देलनि जे ककरो आब निशा चढ़िते ने छैक। निशाना सधने ओ ई सभ सोचिये रहल छलाह कि एकाएक नजरि पड़लनि एकटा मनुक्खपर जे छल तँ मनुक्खे, खादीक वस्त्र पहिरने, मुदा दुनू पयर आ दुनू हाथक भरें सियार जकाँ खन बामा खन दहिना डेग भरैत, धोतीक ढेकाकेँ नांगरि जकाँ फहरबैत पम्पपर पहुँचल।

अबैत देरी मुँह नीचा कयनहि ओ बाजल-'पचास टाकामे टंकी फूल करू।' आ धीरेसँ पंप दिस शरीरकेँ घुमा देलक। मधुकान्त जी आश्चर्यित होइत बजलाह-'अहाँ मनुक्ख भऽ पशु रूप किए धारण कयने छी बन्धु! आ ताहिपरसँ पेट्रोल मांगि रहल छी। अहाँ कोनो कार अथवा कवि सन बेकार तँ नहि छी जे सभ दिन उड़बा लेल अपस्यांत रहैछ। ई सुनि सियार रूपी मनुक्ख मूड़ी उपर उठौलक तँ मधुकान्त जी चौंकि उठलाह। हुनका सोझां साक्षात् महाकवि शशिबोधक सहोदर घनश्यामपुरक विशाल 'शॉटपुट' धारी पशु विशेषज्ञ वैद्यनाथ विमल पेट्रोल लेल उपस्थित छलाह। मधुकान्त जी आह्लादित होइत पुछलथिन-प्रभु, अपने तँ आधुनिक नारद छी, ई रूप किएक?' विमलजी खौंझाइत बजलाह-अहाँक यैह चालि हमरा नहि सोहाइत अछि, रहैत छी सभ दिन बीझ लागल लतिका संग आ नव-नव गप्पक स्वाद चाही प्रियंका चोपड़ा सन। यौ, पहिने पेट्रोल तँ भरू जे हम चैनसँ डांड़ सोझ करी।' मधुकान्त जी एमहर ओमहर तकैत विमलजीक टंकी फूल कऽ देलथिन आ

कहलथिन-चलू, पाइ तँ अहाँ अगिले फगुआ मे देब से हम जनिते छी कमसँ कम आबो तँ नवका किछु कहू।'

विमलजी डाँड़ सोझ करैत मनुक्ख रूपमे आबि गेल छलाह, बनरबा जकाँ कान कुड़ियबैत बजलाह-मिथिलाक सरकार बड़ कष्टमे अछि।'

'से की?'-मधुकान्त जी तपाक सँ पुछलथिन।

हे यौ! अहूँ अपनाकेँ........बूझल सभ अछि आ हमरेसँ बनैत छी। हे सुनू, हमरा 'रमण' जी ओतऽ जायब एखन जरूरी अछि, ओ असक छथि, बासुकी बाबू घर-बाहर कऽ रहल छथि, मुदा उजास नहि भऽ रहल छनि। हम जयबनि तखने हल्लुक होयताह।'

'हम अहाँकेँ नहि रोकब मुदा सरकारवला गप्प तँ कहैत जाउ।' मधुकान्तजी फेर आग्रह कयलथिन। विमलजी बजलाह किछु नहि, झोरामेसँ एकटा सीडी निकालि हुनका दिस बढ़ा देलथिन।' 'एहिमे की छैक?' मधुकान्तजी पुछलथिन। विमलजी बजलाह-'एहीमे सरकारक इतिहास, भूगोल आ हिसाब किताब छनि, अपने आँखिये देखि लेब।' ई कहैत ओ पूर्ववत सियारक आकृतिमे आबि चेतना समिति दिस विदा भऽ गेलाह।

मधुकान्तजी नवतावादी लोक, झट दऽ पाइप फेकि आफिस दिस दौड़लाह। ओतऽ पहिनहिसँ भारद्वाजजीक लेखनीकेँसक्रिय करबा लेल पंचलीटरा मोबिल लेबऽ लेल घेंटाजोड़ी कयने अशोक आ तारानन्द वियोगी नचिकेता मालिकासँ नेहोरा कऽ रहल छलाह मुदा मुंशी रामलोचन कहि देलथिन जे एक बेर देलियनि सँ उत्फाल मचि गेल छल आब देबनि तँ मिथिलो दर्शन लोककेँ नहि करा सकबैक।

एही बीचमे ओतऽ पहुँचि मधुकान्तजी हँफैत बजलाह-तुरत एहि सीडी केँ चलाउ। सरकार संकटमे अछि आ अहाँ सभ मैथिलीक प्राध्यापक जकाँ अनका विषयमे झारैत रहैत छी आ अपना विषयमे जनबाक चेष्टो नहि करैत छी। अन्तराष्ट्रीय स्तरपर अपन मातृभाषा आ अपन-अपन सरकारपर चिन्तन-मनन ओ शोध भऽ रहल छै आ अहाँ सभ मोबिल आ पेट्रोलक मादे मात्र सोचैत छी। सरकार कष्ट मे रहत तँ खरातकेँ बाँटत, गोलैसीक सूत्रके बाँचत। तँ सभसँ पहिने ई सी० डी० केँ देखू आ सरकारकेँ बचाउ।'

नचिकेताजी गंभीर स्वरेँ पुछलनि-'ई सी० डी० कतऽसँ भेटल?' मधुकान्तजी सेहो गंभीर रूपेँ उत्तर देलनि-सौभाग्यसँ मिथिलामे जन्म लेनिहार, 70 घाटक पानि पीनिहार, घर-परिवार, देश-समाजक नीति-नियमसँ सर्वदा आजाद रहनिहार अजित आजाद-द्वारा जारी ई सी. डी. एखनहि मैथिली साहित्यक पशु विशेषज्ञ सह नादरजीसँ फूल टंकी पेट्रोलक एवजमे प्राप्त भेल अछि।'

'ओ, आब बुझलहुँ जे अहाँ किएक एहि सी० डी० केँ देखबा लेल व्याकुल छी। हो ने हो एहिमे जीवकान्तक जोगीरा आ अमरक विरहाक मिक्सर होयत, भीमनाथक गुलगुल्ला आ रामदेवक वाइप्रोडक्टक लीला होयत आ होयत पन्ना-इन्दिरा-नीता-सुशीला आ वीणाक झंकार। चलू अहाँक बात पहिल बेर मानि लैत छी। यौ मुन्शीजी, चढ़ाउ एहि सीडी केँ लैपटॉपपर आ देखाउ हमरा सभकेँ सरकार-दर्शन।' मुंशीजी सीडी लगा प्रोजेक्टरपर देखबय लगैत छथि सीन दर सीन।

-'अपने सभकेँ बूझल अछि जे बिनु गरीब आ सरकारक कोनो देश नहि चलैत छैक, तहिना हमरो मिथिला एहिकेँ लऽकेँ चिन्तित रहैत अछि जे खाहे किछु भऽ जाय एहि दुनूकेँ बचयबा लेल ओ अपन सर्वस्व त्याग कऽ सकैछ। मुदा मिथिलाक दुभाग्य छैक जे ओकर विकास लेल एक्के कार छैक-साहित्यकार,बाकी सभ बेकार। मुदा आइ साहित्यकारक सरकार सेहो संकटमे अछि तेँ मिथिला-मैथिली ओ मैथिल घोर संकटमे अछि। तँ आउ 'सरकार' किएक संकटमे अछि से जनबा लेल मैथिलीक सरकारसँ प्रत्यक्ष गप्प करी।

-अपनेकेँ देखि लगैत अछि जे बेस झमारल, ततारल आ पियासल छी। ई हालति किएक भेल?

-सभसँ पहिने हम अहाँकेँ धन्यवाद दै छी जे अपने हमरा स्मरण कऽ एतऽ आनल। हम आभारी छी। ओना अपनेक प्रश्न हमरा आर बेधि देलक अछि। अपने जनैत छी जे हम मैथिलीक सरकार छी आ तेँ कर्मणे वाचा स्त्रैण होयब स्वाभाविक। बुझू जे यैह हमर दुःख। अबला जीवन तेरी यही कहानी। मन्त्रेश्वरजीक बाँहि पकड़ल-फरब-

फुलायब। मुदा सख-खेहन्ता नहि पूरल। तेँ बुझू झमारल छी। तकर बाद किछु गोटे कहलक जे बोझ केँ सरकार नहि मानब। खासकऽ सम्पादक शरदिन्दु चौधरी आ मधुकान्त झा छेड़खानी करय लागल। बूझू जे दिना दानिस बलात्कारक खतरा उत्पन्न भऽ गेल। अन्ततः हारि कऽ अर्थक सामर्थसँ मातल नर इन्द्र लग गेलहुँ जे इलाजमे कोनो कोताही नहि होयत आ दूधो नहायब पूतो फरब। मुदा ओ तँ आर किदन निकललाह। पैर दबबैत-जँतैत दिन बीत जाइए मुदा हुनका हीरा-पन्नासँ फुरसतिए नहि। कखनो आगिक फूल दैत कहताह–ई अग्निपुष्प थिक, एकरे सँ शृंगार करू, भाग जागि जायत। मुदा हमर भाग देखू जे ओहो ततेक ततारलक अछि जे जीवन क्षणभंगुर लगैत अछि।'

–आ हुनकर टोलीक कुणाल, सुकान्त आ साकेतानन्द अहाँक सख-मनोरथ नहि पूरा करैत छथि की?'

'ओ सभ हमर सख की पुरौताह ओ सभ समलैंगिक छथि। अपनासँ फुरसति होइन तखन ने हमरा दिस मुँह करताह।',

–मैथिलीक सुपरस्टार विदित जी जनिक अपने मान-मर्दन कयलनि से कहाँदन अपनेकेँ पटनावली सरकारक दर्जा देने छथि आ कि नहि?

'देने छथि, ई सत्य अछि मुदा ओ तँ स्वयं रसिया छथि। प्रवासी जी संग संध्यावंदन करताह, ठकुराइन संग युगलबंदी करताह, दरभंगा दरबारक स्तुति करताह आ हमरा कहियो काल हरिमोहन बाबूक काजमे आ कि रायपुरक मंचपर मोजरा करबा लेल पठा देताह। कतबो कहबनि जे सत्ताक चाभी दिअऽ तँ कहताह जे अहाँ 'हाल्ट' छी स्टेशन नहि तेँ अयनिहार-गेनिहारक खबरि राखू खबरि बनबाक चेष्टा नहि करू।'

–की एहि सभसँ अहाँकेँ राजकाजमे कोनो कष्ट अछि आ कि पद-प्रतिष्ठामे?'

'राज तँ अछि काजे नहि अछि। तहिना पदो अछि मुदा प्रतिष्ठा लेल तरसैत रहैत छी।'

–सुनलहुँ अछि जे आइ काल्हि मैथिल गोष्ठी सेहो अहीं सँ सनाथ भेल अछि, की ठीके?

–आखिर मिथिलाक हम सरकार छी जावत धरि विष्ठी बांचल अछि तावत काल डॉ० जगन्नाथ मिश्र जकाँ सूप महक भाँटा बनल सत्ता सुखक प्रत्याशामे गुड़कैत रहब ने।'

–अच्छा एकटा गोपनीय बात कहू–मैथिलीमे अहाँक योगदान-देसकोस छोड़ि?'

–मैथिलीक सभ चिट्ठी पत्री हमरे माध्यमसँ ससरैत छैक, से नहि अहाँकेँ बूझल अछि जे एहन-एहन अनटोटल बात पुछैत छी। पुछबाक अछिये तँ ई पूछू जे के हमर दलानपर नहि अबैत छथि परसाद लेबऽ, तहीसँ हमर ताकतिक पता लागत।'

–अहीं कहि दियऽ अहाँक मंत्रीमंडलक सदस्य के सभ छथि?'

–'पाहुन इन्द्रकान्त झा जी छथि जे आवेदन आ त्यागपत्र दुनू हमरा देबऽ लेल सदिखन जेबीमे रखने रहैत छथि, झाजी वीरेन्द्र छथि जिनकर तार नेपालक उपराष्ट्रपतिसँ सोझे सोझ जुड़ल छनि। आर लोक सभ छथि, जेना पं० योगानन्द झा जी, वैद्यनाथ मिश्र, गणेश झा जी आदि छथि जे कखनो काल हमर मान-मर्दन करैत छथि आ अपनो गर्दनि बचयबा लेल शानसँ चलैत छथि।

साक्षात्कार एखन लैपटॉपपर चलिये रहल छल कि आफिसक बाहर पम्पपर होहल्ला भेल। बच्चा ठाकुरक नेतृत्व मे सुरेन्द्रनाथ, केदार कानन, रमेश चिचिआइत आफिस दिस घुसलाह कि पर्दापर अजित आजादक चेहरा देखिते एक दोसराकेँ चुप रहबाक संकेत देलनि।

अजित सरकार पर अंतिम प्रश्न दागलथिन–अपनेकेँ एतेक विषपान करय पड़ैत अछि, डेग-डेगपर सताच्यूत होयबाक भय रहैत अछि, कखनो छेड़खानी, कौखन अपहरणक आशंका रहैछ। एहि सभ स्थितिमे अपनाकेँ सम्हारबाक शक्ति कतऽसँ प्राप्त होइत अछि?

–'अहाँकेँ बूझल नहि अछि जे मिथिला शक्तिक पीठ थिकीह। मातृशक्ति हमरो अवलंब अछि। ई हमरा सांध्यगोष्ठीसँ प्राप्त होइछ। भाव भंगिमा बदलबाक कला, साहित्य बुझबाक अवगति; प्रेम, स्नेह, करुणा ओ त्यागक सभ स्त्रैण गुण हमरा एतहिसँ प्राप्त होइछ। रहल बात धैर्यक तँ हम सरकार छी। सरकारकेँ ने लाक्षणाक भय होइत छैक आ ने

भयादोहनक। ओ तँ फिल्मसीटीक वक्षस्थल जकाँ होइछ जकरा उघार रखनहि जनसमर्थन भेटैत छैक। आ हे, अहाँकेँ ईहो बता दी जे हमर एही शक्तिसँ भयभीत भऽ शरदिन्दु आ मधुकान्त मैदान छोड़ि भागि पड़लाह आ सत्ता हमरा हाथमे स्वतः आबि गेल छल।'

एकाएक दृश्य बदलल। आब फेर अजित बाजय लगलाह—

—'अहाँलोकनि सरकारक कथा-व्यंथा सुनलहुँ। ओ सरकार तँ छथि मुदा काज नहि करबाक कारणे अथवा ई कही जे कामी लोकनिक सहयोग नहि भेटबाक कारणे बेस पियासल छथि। अहाँ सभसँ निवेदन जे जे जतऽ होइ ततहिसँ एस० एम० एस० कऽ एहि सरकारक ओहिना मदति करियनि जेना राजमोहन झा आ प्रेमशंकर सिंह केँ एस० एम० एस० क बलपर सरकारक दर्जा दैत रहलियनि।

एमहर पर्दापर अजितक समापन वक्तव्य चलिये रहल छल की मधुकान्तजी ओतऽसँ गओंसँ बाहर निकलि गेलाह। बाहरमे सियार रूपी विमलजी घर-बाहरक नाभि काटि हाजिर छलाह। दुनूमे किछु कनफुसकी भेल आ दुनू दौड़ैत पम्प परसँ पड़ा गेलाह। ओम्हर भीतर मे जहाँ अजितक सी० डी० समाप्त भेल की ओतऽ उपस्थित लोकमे गुथ्थमगुथ्थी आ रंग फेका फेकी होमऽ लागल। ई एभ देखि जकरा जेमहर जगह भेटलैक-तेमहरे पड़ायल। कारी रंगसँ सनायल नचिकेताजी बाजि उठलाह-एहिठामक सरकार होअय की जनता सभक एक्के रंग कारी अछि। खासकऽ साहित्यकार तँ सरकारक कार बनय चाहैत अछि। हमरा की हमरा तेल बेचबाक अछि, मिथिलामे बेची कि शान्ति निकेतनमे । पटनामे बसल मिथिलाक सरकारक ई हाल अछि तँ मिथिलाक सरकारक की होयत-'नो इन्ट्रीः मा प्रवीश' सैह ने।' ई सूत्र वाक्य बजैत हाथमे लैपटाप लेने पेट्रोल पम्पक आफिससँ बहार भऽ गेलाह।

◆

शरदिन्दु चौधरी

जन्म	:	7.10.1956, मिश्रटोला, दरभंगा, बिहार
माता	:	स्वर्गीया मोती देवी
पिता	:	पं० सुधांशु 'शेखर' चौधरी
शिक्षा	:	एम.ए. राजनीतिशास्त्र, पटना, विश्वविद्यालय, पटना-1, एल.एल.बी., मगध विश्वविद्यालय, गया
वृत्ति	:	पत्रकारिता 1981-84, मिथिला मिहिर, साप्ताहिक 1984-86 मिथिला मिहिर, दैनिक 1987-89 मिथिला मिहिर, मासिक 1995-2002 आर्यावर्त, हिन्दी दैनिक (फीचर सम्पादक)
सम्प्रति	:	समय-साल, मैथिली द्वैमासिकक सम्पादक 2000सँ तथा मैथिली-हिन्दीमे लेखन । शेखर प्रकाशन (मुद्रक, प्रकाशक एवं पोथी विक्रयकेन्द्र)क व्यवस्थापक-संचालक ।
प्रकाशित कृति	:	◆ जँ हम जनितहुँ ◆ बड़ अजगुत देखल ◆ गोबरगणेश (व्यंग्य संग्रह)।
सम्पादन	:	मैथिली पत्रकारिता : दशा ओ दिशा ◆ साक्षात्कारक दर्पणमे सुधांशु शेखर चौधरी ◆ विद्यापति गीतिका ◆ मैथिली गद्य गौरव (दू भाग) ◆ अभिमत (हिन्दी)। 20 सँ बेसी स्मारिकाक संपादन । आकाशवाणी, दूरदर्शनसँ दर्जनों वार्ता प्रसारित एवं हिन्दी दैनिक तथा मैथिलीक पत्र-पत्रिकामे सयसँ बेसी रचना प्रकाशित ।

सम्पर्क :

2A/39, टेक्स्ट बुक कालोनी, इन्द्रपुरी, पटना-24

मो०न० : 09334102305, 076631211165

E-mail : choudharyshardindu11@gmail.com